Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान
साप्ताहिक

-कुछ काम

ज्ञान साप्ता

हिक, १

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द के मार्ग पर चलना ही सारी समस्याओं का हल

पलवल (डाक से) आज जो भी उलझनें संसार को परेशान किए हैं उनका एक मात्र हल महर्षि दयानन्द के दिखाए मार्ग पर चलने से ही संभव है, इन शब्दों के साथ दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष पं० भारतेन्द्र नाथ ने कहाकि सभी को पूरे बल से अब रचनात्मक कामों में लगना चाहिए।

आपने कहा कि प्रदर्शन बहुत हो चुके, अब आने वाली शताब्दी के प्रथम चरण में, हम नये युग के निर्माण का संकल्प लें। जातिवाद, दहेज और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाएं और देश को मज़बूत बनाएं।

आप ने कहा कि नेताओं की ओर मत देखो, ऋषि दयानन्द को नेता मानो और युग को बदल कर अध्यात्म भाव प्रवाहित करो।

आपने कहा "हम समय के साथ न बहें अपितु प्रभु पर विश्वास रख युग को बदलने का व्रत लें। अगले वर्ष सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी आ रही है अतः अभी से तैयारी करो और सर्वत्र वेद का संदेश गुंजाओ। □

आवरण पृष्ठ कथा

योगेश्वर श्री कृष्ण

द्वापर युग। भारत के भाग्य गगन पर अविद्या एवं अज्ञान का गहन अंधकार छाया था। पथभ्रष्ट मानवता निराशा के गहन गर्त में धंसी किसी युग निर्माता दिशा निर्देशन की प्राप्ति की प्रतीक्षा में। सामाजिक वैषम्य पराकाष्ठा पर था तो राजनीतिक दृष्टि से भी आर्यावर्त अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त होकर खंडित होता जा रहा था। भाई-भाई में परस्पर प्रेम एवं स्नेह के स्थान पर अविश्वास की भावनाएं घर करती जा रहीं थीं तो भाई बहन एवं अन्य पारिवारिक जनों के संबंधों में भी मनोमालिन्य का विष घुल चुका था। ऐसी विषम स्थिति में आज से पांच हजार वर्ष पूर्व मथुरा नगरी में यदुवंशी श्री वसुदेव के कुलदीपक के रूप में माता देवकी ने एक बालक को जन्म दिया। यही थे युग निर्माता श्री कृष्ण। भाद्रकृष्ण अष्टमी की तिमिराच्छन्न निशा में जन्मे इस बालक को गोदी में पाकर भारतभूमि निहाल गई।

क्रूर कंस की क्रूरदृष्टि से बचाने हेतु वसुदेव श्री कृष्ण के पालन पोषण का दायित्व नन्द गोप को स कर उन्हें गोकुल भिजवा दिया था।

युग निर्माता इस बालक ने बाल्यकाल से ही अपन प्रचंड मेधा का परिचय देकर व्रज के ग्वाल बाल सं संगठन एवं समानता का महान् मंत्र फूंका। आचार्य गर्गाचार्य ने इस बालक का यज्ञोपवीत संस्कार कराकर इसे द्विजत्व प्रदान किया तो गोकुल के समीप ही स्थित गुरुकुल में उसने वेद एवं शास्त्रों का विधिपूर्वक अध्ययन किया। अपनी इस बाल्यावस्था में भी श्री कृष्ण गोकुल वासियों को अनेक आपदाओं से बचाते रहे और उन्हें अन्याय एवं अत्याचार तथा अधर्म के विरुद्ध निरन्तर जगाते रहे। व्रजवासियों को मुक्ति दिलाने की दृष्टि से भी उन्होंने सक्रिय पग उठाएं। इन्द्रपूजा के अंधविश्वा को चुनौती देकर उन्होंने व्रजवासियों को गोसंवर्धन यज्ञ के लिए प्रेरित किया तो स्वदेश में व्याप्त फूट एवं विच्छिन्नता की समाप्ति हेतु उन्होंने स्वदेश की अखंडत एवं जन जन में राष्ट्रीयता की मात्रा को प्रचारित एवं प्रसारित करते हुए व्रजमंडल को कंस सरीखे क्रूर व्यक्ति के अत्याचार से भी मुक्ति दिलाई तथा जरासंध, का यवन एवं शिशुपाल सरीखे उच्छृंखल निरंकुशों को स सफल चुनौती दी!

श्री कृष्ण के जीवन के संबंध में आज अनेक मिथ्या धारणाएं भी तथाकथित कृष्ण भक्तों ने प्रचलित की हैं किन्तु महाभारत इस बात की साक्षी प्रस्तुत है कि वेदों के प्रकाण्ड पंडित श्री कृष्ण ने जीवन में केवल देवी रुक्मणी को ही अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकृत किय और १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया तदुपरां उनके यहाँ परम तेजस्वी प्रद्युम्न-सा पुत्र उत्पन्न हुआ।

द्रुपद सुता द्रौपदी के स्वयंवर के समय ही उनक पांडवों से प्रथम परिचय हुआ और तभी से वे पाण्डवों मित्र सहायक परामर्शदाता तथा पथ प्रदर्शक बन गए

श्री कृष्ण अपने युग के महानतम वेद वेदांग मर्म थे इसीलिए भीष्म के परामर्श पर पाण्डवों के राज यज्ञ में उन्हीं को अर्घ्य दिया गया था!

दुर्योधन के साथ जुए में हार जाने पर जब पाण्ड जनों को बनवास व अज्ञातवास की अवधि के समापन

(शेष पृ[illegible] पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्
कृण्वन्तो-विश्वमार्य्यम्
जन-ज्ञान
वेदाः
हिन्दी साप्ताहिक
नई दिल्ली

वर्ष १ ● रविवार १६ मई १९७६ : ३ ज्येष्ठ २०३३ ● अंक १४

ओ३म्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

सम्पादक
पंडिता राकेश रानी

दूरभाष : ५६६६३९
: २०१५८४

पता : वेद मंदिर
१५९७, हरघ्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१, नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५

मूल्य एक प्रति ५० पैसे
वार्षिक मूल्य २०)
विदेश में : पौंड ६ (हवाई डाक से)
४ पौंड (समुद्री डाक से)
आजीवन ३०१ रु०

-कुछ काम
ान साप्ता
हक, १'

अपनी बात

आत्महत्या मत करो !

आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेताओं से हमारी करबद्ध प्रार्थना है कि वे द्वितीय शताब्दी में प्रवेश करते हुए जैसे भी हो आपसी फूट को समाप्त करने को प्राथमिकता दें, अन्यथा जैसे यादव कुल का नाश हुआ था वैसे ही हम सब भी समाप्त हो जायेंगे।

जिन आर्यसमाजों में भी आपस में विवाद हैं वे अपना पूरा बल लगाकर अपने झगड़े समाप्त करें, अन्यथा कुछ भी न बचेगा।

हमें यहाँ यह विवेचना नहीं करनी कि दोष किस का है और अपराधी कौन है ? हमारा निवेदन तो केवल इतना ही है कि सब सारा मनोमालिन्य दूर कर प्रेम भाव से गले मिलकर एकता के गीत गाएं।

यह काम छोटे नहीं कर सकते, बड़े कर सकते हैं। **क्षमा बड़न को चाहिए,** की उक्ति के अनुसार जो जितने ऊंचे पद पर हैं, वे उतनी ही अधिक उदारता दिखा कर, नाराज हुए भाइयों को सन्तुष्ट करें।

पदों की भूख ने हमें पागल बना स्वार्थ ने अन्धा कर दिया है, आखिर यह पद किस की शोभा बनेंगे, जब सब स्वाहा हो जाएगा।

द्वेष के स्थान पर प्यार, स्वार्थ के स्थान पर त्याग, और झगड़ों के स्थान पर कार्य करने की भूख जागे और हम एकता के सूत्र में आबद्ध होकर लक्ष्य पूर्ति में लगें तो वह दिन दूर नहीं, जब सारा संसार ऋषि दयानन्द के झण्डे के नीचे आ जाएगा।

सब कुछ हो सकता है यदि आप के मन में ऋषि के लक्ष्य के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाए। अगर आप के मन में संसार को आर्य बनाने की उद्दाम लालसा उत्पन्न हो जाए, तो सारे झगड़े एक पल में समाप्त हो सकते हैं।

आर्यसमाज का भविष्य क्या होगा, यह इस बात पर निर्भर है कि आप आपस के झगड़े समाप्त करने के लिए तैयार हैं, या नहीं। सारे उत्सव, समारोह प्रदर्शन व्यर्थ हैं, यदि हम एकता के सूत्र में आबद्ध नहीं हो सकते।

हमारी सभी ऋषि के अनुयायियों से सविनय प्रार्थना है कि वे प्रत्येक मूल्य पर आपसी फूट समाप्त करें और आत्म हत्या के मार्ग से हट कर जीवन का, प्रे का, सत्य का सदेश धरती पर गुंजाएं।

—राकेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

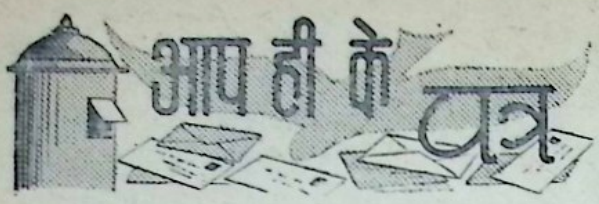

आदरणीय बहिन !

आपके 'वेद प्रचार' करने के कार्य से जो आर्यावर्तीय जनता को नया सबक मिला है और मिलेगा वह अनुपमेय है क्योंकि महर्षि दयानन्द जी के बाद आपने ही अपने संस्थान द्वारा इस देश की भोली जनता का सही मार्ग दर्शन करने का संकल्प लिया है अन्यथा हमारे इस देश के स्वर्णिम धरातल को अपने काले कारनामों से अपवित्र करने में अनेक लोग कुछ कसर नहीं रखते। आपके इस कार्य की जितनी प्रसंशा की जाये वह बहुत कम होगी।

ग्रामों में आर्यसमाज जहां कहीं मौजूद हैं वे निष्क्रिय हैं। वहां के पदाधिकारी आज भी स्वार्थ वश सही मार्ग दर्शन करने में असमर्थ हैं। इन आर्यसमाजों के इन हालात को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि हमारे देश में शायद ही नया सवेरा आ सके।

ओमपाल सिंह तोमर

इस्लामपुर (बिजनौर)

स्तुत्य व सशक्त प्रकाशन

महोदय,

आपके संरक्षण व निर्देशन में दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित जन-ज्ञान मासिक अनेक वर्षों से वेद ज्ञान और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों का प्रचार करता आ रहा है। जन-ज्ञान की विषय वस्तु अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक होती है। खोजपूर्ण लेख, सुन्दर कविताएं तथा अन्य स्तम्भों की सामग्री पत्रिका को सर्वांग पूर्णता प्रदान करती हैं। विशेषांक पठनीय व संग्रहणीय होते हैं। मेरे पास जन-ज्ञान के अंकों का सुन्दर संकलन है जो निराशा के क्षणों में प्रेरणा देता है। संस्थान से प्रकाशित वेद व अन्य साहित्य आर्य जगत् की अनुपम निधि है। शताब्दी वर्ष में इसे साप्ताहिक भी प्रकाशित कर आपने सराहनीय कार्य किया है। इसकी साज-सज्जा भी सुरुचिपूर्ण होती है। साप्ताहिक घटना चक्र के समाचार अच्छे होते हैं। सम्पादकीय लेख अत्यन्त प्रेरणाप्रद होता है। मैंने इसे बहुत अच्छा पाया। इससे ऋषि का संदेश फैले यही मेरी कामना है। कृपया मेरी बधाई स्वीकार करें।

—सत्यनारायण

बहराइच

महोदय,

आपके लेखों को पढ़कर जो प्रचार आपकी लेखनी द्वारा महर्षि दयानन्द की इच्छाओं की पूर्ति के लिए हो रहा है उससे बढ़ कर आज देश भर में कोई भी लेखक या साहित्यकार करता प्रतीत नहीं होता। मेरी भगवान् से प्रार्थना है कि वह आप जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता मनीषियों को चिरायु रखें, जिससे स्वामी दयानन्द का मिशन गतिमान् हो सके। मैं तो आपकी इस बात की भी बड़ी भारी प्रशंसा करता हूं कि आपने आचार्य दयानन्द और आचार्य सायण के भाष्य के सम्बन्ध में जो आवाज उठाई वह स्तुत्य कार्य था। मैं तो यही कहूंगा कि आप सरीखे निडर व्यक्ति ही ऐसी आवाज उठा सकते हैं। हमारी प्रभु से यही प्रार्थना है कि दयानन्द संस्थान दिन-रात उन्नति करे।

छिपरौली **रघुवीर सिंह भूषण**

आदरणीय पूज्यपाद भारतेन्द्र जी एवं माता राकेशरानी जी,

सादर नमस्ते।

मैं आर्य पुत्र होने के नाते आपके साप्ताहिक "जनज्ञान" का भी पाठक हूं। इसके प्रत्येक अंक की मात्र आठ दिन की अवधि मुझे आठ युग सी प्रतीत होती है। और जब अंक सामने आता है तो हृदय प्रफुल्लित हो उठता है। अभी मेरे हाथों में आठवां अंक है जिसका आवरण एवं कागज श्रेष्ठता का प्रतीक है। प्रथम पृष्ठ पर सम्पादकीय "बाल कटाने का फैशन..... ..." हृदय के द्वारों को झंझोड़ता ही चला गया। लेकिन इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं। आपके द्वारा प्रेषित १०-सूत्री कार्यक्रम निश्चय ही प्रेरणात्मक है जिसमें तीसरा सूत्र "आर्य समाज की वेदी से राजनैतिक व्याख्यान न कराए जाएं" अत्यन्त आवश्यक है। बल्कि मेरी राय में आर्य सदन से जो इसको प्रोत्साहन करे उसका बहिष्कार हो। "नारी जगत्" के पश्चात् "शिशु संसद्" पृष्ठ मूल्यवान् है। आशा है सह सम्पादिका कु० आभा आगे भी इसी प्रकार के रोचक कथानक "शिशु संसद् में प्रस्तुत करेंगी।

कविताओं का उद्धरण यदि आप "वन्दना के स्वर" से दिया करें तो अच्छा रहेगा और उस पुस्तक का प्रसार प्रचार भी बढ़ेगा। **—एक पाठक**

सत्यार्थ प्रकाश

पुस्तक साइज : २००) सैकड़ा, बड़ा साइज : २५०) सैकड़ा, सजिल्द : ३००) सैकड़ा, कपड़े की जिल्द : ५००) सैकड़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—नरेन्द्र

उच्चतम न्यायालय का निर्णय

उच्चतम न्यायालय के पाँच न्यायाधीशों के सामने यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न था कि आपात स्थिति की घोषणा के पश्चात् नागरिकों का बन्दी प्रत्यक्षीकरण याचिका का अधिकार जीवित रहता है या नहीं। हैबियस कार्पस (बन्दी प्रत्यक्षीकरण) लेटिन भाषा का शब्द है जिसका शब्दार्थ है 'शरीर पेश करना।' कानूनी शब्दों में इसका यह अर्थ है कि जिसको सरकार ने गिरफ्तार कर लिया है उसे अदालत के समक्ष पेश किया जाए ताकि अदालत यह फैसला करे कि उसकी गिरफ्तारी उचित है या नहीं। सात उच्च न्यायालयों ने यह फैसला दिया था कि बुनियादी अधिकारों के निलम्बित हो जाने के बावजूद बन्दी प्रत्यक्षीकरण याचिका सुनी जा सकती है। केन्द्रीय सरकार ने उनके विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील की थी। अब उच्चतम न्यायालय ने एक के विरुद्ध चार न्यायाधीशों के बहुमत से यह फतवा दिया है कि बुनियादी अधिकारों के निलम्बित हो जाने के बाद किसी नागरिक का यह अधिकार नहीं रहता कि उच्च न्यायालय में आकर यह कहे कि इसकी गिरफ्तारी अवध है। दूसरे शब्दों में यह कि अब एक मामूली पुलिस अफसर अपनी व्यक्तिगत शत्रुता के कारण सरासर गैर-कानूनी तरीके पर भी आपको जेल में डाल दे तो आपके पास कोई अधिकार नहीं कि आप किसी अदालत का द्वार खटखटायें।

जितनी देर उस अफसर की इच्छा हो आपको जेल में रहना होगा। किसी अदालत को यह देखने का अधिकार न होगा कि आपको गैर कानूनी तरीके पर जेल में डाला गया है और न ही यह देखने का कि जो अभियोग लगा कर आपको गिरफ्तार किया गया है उसमें कुछ वजन भी है। दूसरे शब्दों में यह कि अब सरकार का नागरिक के जीवन पर पूर्ण नियन्त्रण हो चुका है। जब यह बहस उच्चतम न्यायालय में जारी थी तो सरकारी वकील ने तो यहां तक कह दिया था कि यदि कोई सरकारी अफसर सरासर गलत तरीके पर किसी नागरिक की हत्या भी कर देता है तब भी उसके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं हो सकती अर्थात् यह कि जब तक हंगामी हालात का तकाजा है नागरिकों के समस्त अधिकार सरकार की दया पर हैं और किसी को यह अधिकार नहीं कि अपने से होने वाले किसी अन्याय के विरुद्ध वावेला कर सके। आप कितने ही बेगुनाह क्यों न हों, कोई सुनवाई न होगी।

किसी अदालत के किसी फैसले के आगे प्रत्येक नागरिक को सिर झुका देना होता है परन्तु पूरे सम्मान से प्रत्येक को यह कहने का भी अधिकार है कि वह इस निर्णय से सहमत नहीं है। सत्य यह है कि जो अधिकार सरकार ने प्राप्त कर लिया है, उसके बाद एक सभ्य जीवन असम्भव बन जाएगा। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि कोई अदालत इस तरीके पर नहीं सोच सकती जिस प्रकार सरकार सोचती है।

कुछ हालात में सरकार को देश के हित को देखते हुए नागरिक को नजरबंद भी करना पड़ता है परन्तु आज तो हालत यह है कि यदि सरकार सब कुछ बिलकुल अनुचित रूप से करे तब भी कोई रोकने वाला नहीं। जब सरकारी वकील ने यहां तक कह दिया कि यदि किसी बेगुनाह की हत्या भी कर दी जाये तब भी सरकार किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं तो इस हालत में यह कहना गलत न होगा कि देश में सभ्य शासन समाप्त हो जाएगा। अन्य देशों को भी ऐसे हालात से दो-चार होना पड़ा है। हमने अपना संविधान ब्रिटेन और अमरीका को देखकर बनाया है क्योंकि ये दोनों देश लोकतंत्रीय हैं। दोनों को ऐसे हालात से दो-चार होना पड़ा है जबकि नागरिकों की नजरबंदी आवश्यक हो जाए। परन्तु दोनों में सरकार को इतने अंधाधुन्ध अधिकार नहीं मिले कि निरपराधों को भी जेल में डाल दे और किसी के प्रति उत्तरदायी न हो। सत्य है कि सरकार ने ऐसे पग उठाए हुए हैं जिनमें प्रत्येक नजरबन्द के केस पर विचार होता है, परन्तु इस बात से कैसे इन्कार किया जा सकता है कि यह फैसला अदालती नहीं हो सकता। जिन लोगों ने किसी नजरबन्द के केस पर विचार करना है वे सरकारी अफसर हैं या सरकार द्वारा मनोनीत हैं। सरकार की ओर से इनके सामने जो बात रखी जायेगी, चाहे कितनी ही गलत और निराधार क्यों न हो, उस पर यह अपना फैसला देंगे। नजरबन्द को यह भी न बताया जाएगा कि उसका दोष क्या है और उसे क्यों गिरफ्तार किया गया है। युद्ध के दिनों में ब्रिटेन और अमरीका में सरकार ने ऐसे अधिकार प्राप्त कर लिए थे परन्तु उन दिनों में भी अदालतों का यह अधिकार समाप्त न हुआ था कि वह यह देखें कि किसी से जबर्दस्ती तो नहीं हो रही। आज भारत में किसी अदालत को यह अधिकार नहीं रहा कि सरकार की ज्यादती को रोक सके। उच्चतम न्यायालय ने सरकार का यह अधिकार मान लिया है, इसलिए इसके आगे सिर तो झुकाना होगा परन्तु यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि तबीयत यह फैसला मानने से इन्कार करती है।

-कुछ काम १९७६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—नरेन्द्र

मुसलमानों को आश्वासन

सांप्रदायिकता की नई व्यवस्था और आपत्तिजनक मामलों के कानून के बाद मुसलमानों के संबंध में कोनसी बात कहना गुनाह हो गया है यह भी नहीं पता। फिर भी मैं समझता हूं कि मुसलमानों को बधाई देना तो शायद किसी दृष्टि से आपत्तिजनक नहीं कहा जा सकता। बधाई मैं उन्हें इसलिए दे रहा हूं क्योंकि उनके हठ ने भारत सरकार के बड़े बड़ों को उनके कदमों पर गिरने पर बाध्य किया है। आज सब ओर से एक ही आवाज आ रही है कि मुसलमानों के व्यक्तगत कानून में हस्तक्षेप न किया जाएगा। पूछा जा सकता है कि कौन-कौन से मामलों में हस्तक्षेप न होगा। व्यक्तिगत कानून में विवाह और तलाक है, एक से अधिक पत्नियां रखना है, बच्चे पैदा करना है—इत्यादि-इत्यादि। भारत सरकार ने कह दिया है कि इनमें कोई हस्तक्षेप न होगा और यदि कोई संशोधन होता है तो उसी स्थिति में होगा जब मुसलमान स्वयं चाहेंगे। स्वयं से क्या तात्पर्य है यह भी कोई नहीं जानता। यदि सरकार प्रचंड बहुमत को भी अल्पमत ही कहती रहे तो सर्वोच्च न्यायालय भी यह नहीं कह सकता कि वह गलतबयानी कर रही है। फिर भी मुसलमानों की स्थिति में एक अन्तर है। हिन्दू बहुमत भी यदि कोई मांग करता है तो सरकार उसे यहकर रद्द कर सकती है कि यह तो अल्पमत की मांग है और एक लोकतांत्रिक सरकार अल्पमत की सुनने की पाबन्द नहीं परंतु जब मुसलमान कोई मांग करते हैं तो यह कहकर उसे मान लिया जाता है कि सरकार को अल्पसंख्यकों का विशेष ध्यान है। हिन्दुओं की स्थिति में तो यह कह दिया जाता है कि इस देश में प्रगतिशील पग उठाये जा रहे हैं और यदि कोई सिरफिरा उनका विरोध करेगा तो उसकी उपेक्षा कर दी जायेगी, परंतु मुसलमानों की स्थिति में सब बातों की उपेक्षा की जानी है। मुसलमान महिलाएं चीखती और चिल्लाती रहें उनकी नहीं सुनी जानी। मुसलमान देवियां चाहे यह मांग करती रहें कि एक पत्नी की विद्यमानता में दूसरी पत्नी लाने की अनुमति किसी मुसलमान को न हो परंतु हमारी प्रगतिशील सरकार उस पर कान न धरेगी। बच्चों की अंधाधुन्ध पैदाईश सरकार की सभी योजनाओं को अस्त-व्यस्त करके रख दे परंतु मुसलमानों की स्थिति में चार पत्नियों की अनुमति होगी और प्रत्येक को तीन तब बच्चे पैदा करने की अनुमति होगी। लोक सभा की कम्युनिस्ट सदस्य श्रीमती रोजा देशपांडे कह रही हैं कि मुसलमान महिलाओं का बहुमत एक पत्नी की विद्यमानता में दूसरी लाने के विरुद्ध है परंतु कौन सुनता है। जब फैसला हमारी सरकार ने करना है तो मुसलमान देवियों की कौन सुनता है। ●

आर्य जगत्

—आर्यसाज उदयपुर का वार्षिकोत्सव ७ से ९ मई तक आयोजित हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् संन्यासियों एवं नेताओं के प्रवचन व व्याख्यान हुए।

—गुरुकुल गौरौला (अलीगढ़) में १५-१६-१७ जन को यज्ञ होने के पश्चात् छात्रों का प्रवेश आरम्भ है। इस गुरुकुल के लिए श्री लालाराम आर्य ने २० बीघा भूमि, सारा बाग, ३ मकान, ८ तोला सोना व सम्पूर्ण जीवन, ३५ मन अन्न एवं २०० रुपए अर्पित किया है।

—आर्यसमाज राजचैनपुर का षष्ठ वार्षिकोत्सव श्री हरिप्रसाद आर्य एवं मंत्री श्री हजारी प्रसाद आर्य के संचालन में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

वर चाहिए

२०-१/२ वर्षीय गर्ग गोत्रीय, बी० एससी० (द्वितीय, वर्ष) कद १५५ से० मी०, रंग साफ, स्वस्थ, सुन्दर, सुशील, गृह-कार्य एवं बुनाई आदि में दक्ष आर्य परिवार की कन्या हेतु उच्च शिक्षित, सुसंस्कृत एवं व्यवस्थापित वैदिक धर्मावलम्बी उपयुक्त वर चाहिये। आदर्श विवाह के इच्छुक एव दहेज विरोधी भावना वाले सज्जन ही लिखें।

सत्यप्रकाश गुप्त

प्रेरक व्यक्तित्व

परम पूज्य दीदी, अभिवादन स्वीकार हो।

'जनज्ञान' साप्ताहिक का प्रथम अंक जब पढ़ने को मिला तो हार्दिक प्रसन्नता हुई। वास्तव में आप भारत की आदर्श नारियों में से एक हैं। आपके लेख व विचार पढ़कर भावी पीढ़ी को जो प्रेरणा मिलती है, वह सराहनीय है।

मैं हृदय से आपकी बड़ी आभारी हूं। साथ ही यह कामना करती हूँ कि असीम सत्ता आपके कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दे। जनज्ञान में आपकी प्रतिभा को देखकर हृदय श्रद्धा से भर जाता है।

शुभाकांक्षिणी
कु० उषा चौहान
कांठ (मुरादाबाद)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

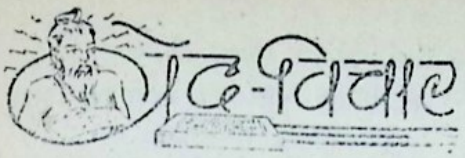

—भारतेन्द्र नाथ

वाणी की मधुरता

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गंधर्वः केतपूः केतं नः पुनातु
वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ यजुः अ० ३०।१ ॥

अर्थ—हे (सवितः देव) उत्पादक ईश्वर ! (भगाय) ऐश्वर्य के लिए (यज्ञ) सत्कर्म की (प्रसुव) प्रेरणा करो। (दिव्यः) दैवी गुणी से युक्त (गंधर्वः) वाणी का पोषक और (केतपूः) ज्ञान से पवित्र करने वाला (नः) हम सब के (केतं) ज्ञान को (पुनातु) पवित्र रखें। तथा (वाचस्पतिः) वाणी का स्वामी (नः वाचं) हम सब की वाणी को (स्वदतु-स्वादयतु) स्वाद में युक्त अर्थात् मीठी बनाए।

भावार्थ—परमेश्वर सब को सत्कर्म करने की तथा सत्कर्म का संरक्षण करने की बुद्धि देवे। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाला ज्ञानी हम सबके ज्ञान को पवित्र करे तथा उत्तम वक्ता हम सब की वाणी को मधुर बनावे, जिससे हम सब की उन्नति हो सके।

उक्त आशय इस मन्त्र का है। उन्नति चाहने वाले मनुष्यों के अन्दर जिन-जिन गुणों का विकास होने की आवश्यकता है उन गुणों का उल्लेख उक्त मन्त्र में है—

(१) सत्कर्म की प्रेरणा (२) सत्कर्म का संरक्षण (३) ज्ञान से पवित्रता और (४) वाणी का माधुर्य।

ये चार सद्गुण हैं जिन से मानव मानवता के पथ पर अविराम गति से चलता रहता है।

आइये, हम इस मन्त्र पर गहराई से विचार करें—

प्रथम शब्द है, "देव सवितः" सविता परमेश्वर की शक्ति का नाम है। देखिए—

'सविता वै देवानां प्रसविता'

शत० ब्रा० १।१।२।१७॥

सारे देवों (सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु अग्नि आदि) का उत्पन्न कर्त्ता परमेश्वर है।

सब देवों की उत्पत्ति करने वाली शक्ति सविता है।

'सविता' का वर्णन तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी देखें।

सविता प्रसविता दीप्तो दीप्यन् दीप्यमानः ॥

तैत्ति० ब्रा० ३।१०१।२॥

'सविता' सब का उत्पादक है, वह स्वयं तेजस्वी है, [illegible] है।

-कुछ काम

'सु' धातु से 'सविता' शब्द बनता है। प्रसव, ऐश्वर्य, प्रेरणा, ये तीन अर्थ इस धातु के हैं। उत्पन्न करना, प्रभुत्व करना और प्रेरणा करना ये तीन भाव सविता शब्द में निहित हैं। सबको धर्म की प्रेरणा करने वाला परमेश्वर ही सविता है।

मानव, अपने अंतस् की समस्त भावनाएं साथ ले जब उन्नति पथ की ओर अग्रसर होता है वह उस समय अपनी शक्तियों की वृद्धि के लिये प्रार्थना करता है सर्व जगत् को प्रेरणा देने वाले प्रभु से। वह चाहता है उसे नित नई प्रेरणा मिलती रहे, निरन्तर मिलती रहे, इसी निरन्तर प्रेरणा प्राप्ति की महती भावना 'सविता' शब्द में ध्वनित है।

'प्रसुव यज्ञम्।'

'यज्ञ' का अर्थ ही श्रेष्ठतम कर्म है।

'श्रेष्ठतम' कर्म की प्रेरणा करो। यह उपदेश उक्त वाक्य से मिलता है। प्रत्येक मानव हृदय में उच्च पवित्र कर्म करने की प्रेरणा व भावना होनी चाहिए। सर्वत्र उत्साह की प्रेरणा से सभी कर्म करते रहें इसी में ससार चक्र की उन्नति का मूल छिपा है।

निरन्तर पीड़ा मय संसार की काली-काली घटाओं में बहते हुए वैदिक धर्मी, आस्तिक व्यक्ति हिम्मत नहीं हारती, अपितु निरन्तर बढ़ते रहने की इच्छा लेकर वह सभी दुःखों को, कष्टों को, पी लेना चाहता है। और पर-दुःखहरण ही उच्च कर्म है। यज्ञ धर्म है।

'प्रसुव यज्ञपतिं भगाय' यजु० अ० ३०।१।

'भग' शब्द का अर्थ है उन्नति, अभ्युदय महानता आदि।

अर्थात् संसार में ऐसी जितनी भी विभूतियां हैं जिनको पाकर मानव महान् बन जाता है। उसके हृदय में संतोष व आनन्द की सरिता प्रवाहित होने लगती है। उन सभी को 'भग' कहा जा सकता है।

भक्त भगवान् से उसको समीपतम समझ प्रार्थना करता है कि 'वह प्रेरणादायक प्रभु हमारे हृदय में यज्ञ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की (शुभ कर्मों की) प्रेरणा निरन्तर अविराम गति से करता रहे और यज्ञ के स्वामी को (शुभ पथ पर चलने वालों को) सदैव सत्कर्मों का प्रवाह प्रवाहित करते रहने की प्रेरणा देता रहे।

नाना प्रकार के कष्टों और पीड़ाओं से घिरे हुए पृथ्वातल पर शान्ति और आनन्द की सरिता प्रवाहित करने के लिवे यह आवश्यक है कि हम मन वचन और कार्य से शुभ सोचें, शुभ करें, और शुभ प्रेरणाएं दूसरों का दें। जब हम ऐसा चाहते हैं तो हम सभी के नियंता, सृष्टि के सूत्राधार से यही कहते हैं कि जितने भी ऐश्वर्य, प्रकाश और आनन्द प्राणिमात्र के कल्याण मय भोग के लिए उसने पृथ्वी पर प्रदान किए हैं हमें मिलते रहें और हम अविरल गति से प्रेम की मन्दाकिनी बहाते हुए उसी की राह पर, उसके ही होकर चलते रहें।

'दिव्यो गंधर्वः केतपूः केतं नः पुनातु'
'गां वाचं धारयतीति गंधर्वः॥'

उत्तम वाणी का धारण करने वाला जो उत्तम वक्ता होता है उसका नाम गंधर्व होता है।

अतः इस पद का भावार्थ हुआ कि दिव्य गुण युक्त वक्ता अपने ज्ञान से हम सभी के ज्ञान को पवित्र करें।

हम चाहते हैं कि संसार यज्ञमय हो, सुख, और शान्ति की राह पर चले। हम यह भी इच्छा रखते हैं कि धरती तल के सारे मानव शुभ प्रेरणायुत ही कर्म करने वाले हों, वह एक ही राह पर चलें और वह राह प्रभु की हो।

संसार के अन्य मतावलम्बी अपनी बात (विचार) मनवाने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद का आश्रय लेते हैं। पर वेद ज्ञान की अलौकिकता, अपूर्वता देखिए, कितना महान् आदर्श है। शान्ति पथ का कितना मनोहर आलम्बन है कि वह दिव्य गुण वक्ता जो अपनी राह पर, धर्म मार्ग पर, यज्ञ प्रकाश की ओर हमें ले जाना चाहता है अपने ज्ञान से हमें ज्ञानयुत करे। लाठी से नहीं, धन लालच से भी नहीं अपितु अपने अगाध सत्य ज्ञान से वह सभी के हृदय का अन्धकार अज्ञान हटा दे। ताकि हम भी अपने ज्ञान नेत्रों को खोल उसी सत्य पथ के राही बन सकें जिस पर वह चल रहा है।

पर हो सकता है कि हमें (ज्ञान) वाणी से देने वाला भी कड़वी, तीखी, बातें कहकर हमारा उपहास उड़ाकर, हमें राह बताना चाहे। आज तो संसार में चारों ओर होता भी ऐसा ही है। सभी अपनी-अपनी बातों को मनवाने के लिये नाना आडंबरों का आश्रय, झूठ, छल कपट की भाषा में लेते हैं और अनाचार पापाचार की आग फैलाते हैं। तो सच्चा उपाय भ्रान्त को राह बताने का कौन सा हो।

वेद कहता है :—

"वाचस्पतिः वाचं नः स्वदतु।"

वाणी का स्वामी हम सभी की वाणी को मीठी बनावे।

हम जो कुछ भी कहना चाहें वह मीठा हो। हृदय में प्रेम भरा हो और वही प्रेम का मधुर अस्त्र लेकर हम विश्वविजय करने निकलें।

यह है वेद का सन्देश।

वाणी में मिठास न होने से संसार के सारे झगड़े फिसाद तथा द्वेष उत्पन्न होते हैं। अथर्व वेद १।३४ में भी वेद कहता है।

जिह्वा अग्रे मधु मे जिह्वा मूले मधूलकम्।

मेरी जिह्वा के अग्रभाग में माधुर्य है। मेरी जिह्वा के मूल में मधुरता है।

तात्पर्य यह है कि हम संसृति की सारी अनुभूतियों को प्रेरणामय यज्ञमय बनाने के लिये प्रेम का आश्रय लें। भिन्न-भिन्न पथ के पथिकों को एक राह पर लाना हमारा कर्त्तव्य है। संसार को यज्ञमय, त्यागमय, बनाना हमारी चाह है पर हमारी चाह यह भी है कि इस सारे उद्योग के लिये हम प्रभु का ज्ञान साथ लेकर धर्म और प्रेम का संबल न छोड़ें प्रभु का प्रकाश हमारे पथ की ज्योति बने, प्रेरणा देता रहे। हम सफल हों। संसार स्वर्ग धाम बने और फिर चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश हो।

मेरी प्रार्थना

विपत्ति में मेरी रक्षा करो—यह मेरी प्रार्थना नहीं है। (केवल यही हो कि) मैं विपत्ति से डरूँ नहीं।

दुःखी और व्यथित चित्त को तुमने सान्त्वना नहीं दी तो न सही, (केवल यही हो कि) मैं दुःख को जीत सकूं।

यदि मेरा कोई सहायक न मिले तो ऐसा हो कि मेरा अपना बल न टूटे, संसार में यदि क्षति ही होती रहे और मैं वंचना ही पाता रहूं तो भी ऐसा हो कि मैं अपने मन में हार न मानूं।

तुम मेरी रक्षा करोगे, ऐसी मेरी प्रार्थना नहीं है। (केवल यही हो कि) मुझ में इतनी शक्ति हो कि मैं तैर सकूं।

मेरा भार हलका करके तुमने सान्त्वना नहीं दी तो न सही। (केवल यही हो कि) मैं स्वयं उसे ढो सकूं।

सुख के दिनों में मैं सिर झुकाकर तुम्हारा ही मुख पहचान लूंगा। दुःख की रात को जब सारी पृथ्वी मुझे धोखा दे (उस दिन ऐसा हो कि) मैं तुम्हारे ऊपर सन्देह न करूं।"

—रवीन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

औषधि होते हुए भी रोगी को यदि डाक्टर मरने दे तो

क्या यह अपराध नहीं है ?

महान् परिवर्तनों के इस युग में जब वैज्ञानिक भौतिकवाद की उन्नति ने शिक्षित वर्ग को जड़ पूजा की आराधना में लगा रखा है और अर्धशिक्षित या अशिक्षित वर्ग रूढ़िवाद के मोह जाल में फंसा हुआ जीवन यापन कर रहा है, नाना प्रकार के मत-मतांतर, वाद, भेद, पृथ्वी तल पर बढ़ते जा रहे हैं, हम कुछ पूछना चाहते हैं उन व्यक्तियों से जो संसार में एक प्रवाह, एक राह बनाना चाहते हैं।

यह सत्य है कि विश्व में केवल आर्य समाज ही ऐसा आन्दोलन है जो तर्कसम्मत वैज्ञानिक और सत्य पर आधारित है। रूढ़िवाद और मानव जाति के छिन्न-भिन्न करने वाले साधनों पर जिसे रंच मात्र भी विश्वास नहीं। भौतिकवाद को अनर्थकारी मानकर जो जड़ पूजा का उन्मूलन चाह, सत्य वस्तु आत्मा के आनन्द की आराधना सिखाता है। विश्व के हर मन में सच्ची शान्ति का प्रसार मानवता का विस्तार यदि कर सकता है तो आर्य समाज। पर.....

क्या हमारा आज का कार्यक्रम ऐसा है जो विश्व के सम्मुख आदर्श रख सकता हो ? क्या हमारे कार्यकर्ता ऐसे हैं जिन्हें आर्य कहा जा सके ? क्या हम लोग आज लच्छेदार भाषण और भजन बोल कर या बुलवा कर ही अपने कर्तव्य को समाप्ति नही समझ लेते ? क्या हमारे अपने चरित्र आज ऐसे उन्नत हैं कि दूसरे हम से कुछ सीख सकें ?

ये जलते हुए सवाल हैं जो मैं हर आर्य से पूछना चाहता हूं।

चारों ओर अत्याचार फैलता जा रहा है। भ्रष्टाचार की लहरें अविराम गति से ठाठें मार रही हैं, रूढ़िवाद हमारे घरों में घुसकर हमें अपनी चक्की में पीस रहा है और हम दुनियां के साथ बहते हुए अपने को आर्य कह कर ससार को धोखा दे रहे हैं।

पर यह क्यों ?

आर्य धर्म के प्रसार का ! आज महान् क्रान्ति की आवश्यकता है। तूफानी जहरीली लहरों को रोकने के लिए संसार आपकी ओर आशायुक्त नयनों से निहार रहा है। पर इसके लिये पहले आपको अपनी शुद्धि करनी होगी।

(शेष पृष्ठ पर)
अपने [illegible] उनका आचरण सिद्धांतों के अनु-
-कुछ काम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

कूल न हो कोई अधिकार नहीं कि वे पवित्र आर्य शब्द पर कलंक लगाएं। वे अलग हो जाएं, जीवन सुधारें और जब उनमें त्याग और प्रभु प्रेम का प्रकाश भर जाए तब आएं मैदान में। जनता आर्य धर्म के रास्ते पर उनके जीवन को देख दौड़ने लगेगी।

यह आवश्यक नहीं कि हम संख्या में अधिक हों, आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम जितने भी हों 'आर्य' हों।

ढोंग बढ़ रहे हैं, मूर्ति पूजा बढ़ रही है, विलासिता बढ़ रही है। राक्षसीपन नंगा नाच-नाच रहा है। यह कैसी विडम्बना है ?

सभी आर्यों से हमें कहना है कि वे अपने कर्मों को टटोलें और देखें कि वे किन-किन अंशों में आर्य हैं। जिस रास्ते पर वे चलने का दम भरते हैं क्या उस पर चलने की तैयारी भी उन्होंने की है। प्रबल आवाज उठानी चाहिए आज की आर्य समाज को एक जीवित आन्दोलन बनाया जाये। ऐसा करने के लिए आज आर्य समाज को ऐसे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जो अपनी देह को भट्टी में जलाकर दूसरों के गन्द जलाना चाहते हों। जो मिट-मिट कर दूसरों को जीवन दे सकें।

क्या ऐसे कार्य कर्ता आज हमारे पास हैं ?

जो ऐसा नहीं कर सकते और केवल लकीर पीट रहे हैं, वे छोड़ दें ढोंग को। स्वयं पाप के भागी, दयानन्द के मिशन को अधूरा डाल कर, खराब कर के, न बनें।

१०-२० वे व्यक्ति मैदान में आएं जो कुछ करना चाहते हैं वेद का आधार ले कर।

मुसीबतें आएं, आने दें। तूफान, जात-पात के, रूढ़ियों के बन्धन, लोगों की गालियां, कुवचन, उन्हें मार्ग से न डिगा सकें, और बढ़ते ही चले जाएं वेद-ज्ञान सूर्य को साथ लेकर हर मन में ज्योति जगाने के लिए।

आर्य समाजों को केन्द्र बनाया जाए आस-पास आन्दोलन चलने का। कार्यकर्त्ता एकत्रित हो कर उनमें आस पास के सारे गलत कामों को जड़ से मिटाने के लिए तीव्र संघर्ष छेड़ दें। चाहे सारा संसार एक ओर हो, घबराये नहीं।

अकेले दयानन्द ने सारे संसार की राह बदल दी। और आज हम उस को अपना नेता, गुरु और आदर्श

(शेष पृष्ठ १० पर)

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देव दयानंद के चरणचिह्नों पर चलो

—वेदमित्र आर्य

आर्य समाज शताब्दी वर्ष में ऋषि की महानतायें बरबस नेत्रों के सामने चमक जाती हैं। जहां गुरुवर युगद्रष्टा थे, ब्रह्मचारी थे, वेदों के प्रकांड पंडित थे, क्रांतिकारी थे, राजनीतिज्ञ थे, समाज सुधारक थे, योगी थे वहां वे दया के सागर थे,

अन्तर्दर्शी दयानन्द ने अपने अन्तिम दिनों में जगन्नाथ विष देने वाले को रुपये देकर संसार में वह अलौकिक कार्य किया जो बड़े बड़े महापुरुषों को भी नसीब नहीं हो सका। (घटना संवत् १९४०, २९ सितम्बर १८८३)।

यदि इस घटना पर गम्भीरता से विचार करें तो शरीर कांपने लगता है। एक तरफ जगन्नाथ जिसने ऋषिवर को विष पिलाकर मारने का दुःसाहस किया तथा दूसरी ओर वह महान् व्यक्ति मृत्यु शय्या पर पड़ा है जो अपने हत्यारे को रुपये देकर जान बचाने के लिए नेपाल चले जाने का परामर्श देता है। क्या संसार के लोग इस अद्भुत दया पर विश्वास कर सकते है? दयानन्द तुम धन्य हो।

जब जगन्नाथ विष खिलाकर और स्वामीजी से रुपये लेकर शाहपुरा धीश के यहां पहुंचा तो उन्होंने उसे न्यायालय को सौंप दिया। तब उसने अपना दुष्कर्म स्वीकार कर लिया। शहापुराधीश अपने अपयश के भय से जगन्नाथ को किसी से मिलने नहीं दिया करते थे। अपने निकट से भी उसे भगा दिया, स्वामीजी की सेवा के लिए जगन्नाथ को शाहापुराधीश ने ही भेजा था। उसके दुष्कर्म से उन्हें महान् दुःख हुआ। जगन्नाथ का सारा वंश नष्ट हो गया। ब्रह्महत्या का यही परिणाम होता है।

महर्षि का यह वाक्य कि "मैं संसार को कैद कराने नहीं, कैद से छुड़ाने आया हूं, अमर रहेगा। धन्य है उस महापुरुष की आत्मा की पवित्रता तथा विशालता। आज मैं आर्यबन्धुओं से अनुरोध करना चाहूंगा कि अपने गुरुवर क्षमाशील ऋषि द्वारा स्थापित आर्य समाज शताब्दी वर्ष में समस्त आर्य बन्धु भी एक दूसरे को क्षमा कर दें और समाजों में प्रेम तथा सद्भावना की गंगा को प्रवाहित करें। सभी आर्यों से जो आर्य समाज से प्रेम रखते है हमें कहना है कि आर्य समाज शताब्दी वर्ष में हम ऋषि द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धांतों को फैलाने में तन-मन-धन से जुट जाएं। प्रत्येक ऋषिभक्त आर्य समाज की वर्तमान फूट से चिंतित है तथा उसमें नई जाग्रति लाने की तड़प रखता है, परन्तु पहल कौन करे? सच तो यह है कि इस क्षेत्र में जीत उसी की होती है जो सामाजिक हित को ध्यान में रखकर तथा अपने आप हटकर उस संघटन को चलाने के लिए दूसरों (नवयुवकों) को मौका दे। आर्य समाज के १०वें नियम में स्पष्ट है कि "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।"

आध्यात्मिक जीवन भी क्या विचित्र जीवन है, जहां मृत्यु का वरण करने वाला अमर बनता है। अपयश को प्रसन्नता से स्वीकार करने वाला यशस्वी होता है और सामाजिक संगठन को दृष्टि में रखकर विरोधी विचार वालों से क्षमा याचना करने वाला उदारहृदय विजय को प्राप्त करता है।

अगर शताब्दी वर्ष के दौरान हम सभी आर्य बन्धु एक हो गये तथा हमने आपसी मतभेद भुलाकर एकता का परिचय दिया तो मेरा अटल विश्वास है कि जो पाखंड तरह तरह के भगवान् अवतरित हुए हैं तथा देश में फैली धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, व आर्थिक विषमताएं स्वयं ही समाप्त हो जायेंगे क्योंकि पांखडी यह समझ बैठे हैं कि आर्य लोग आपस में लड रहे हैं अब हमें रोकने वाला कौन है।

आर्यों! उठो! ऋषि द्वारा प्रारम्भ किये गये इस पुण्य यज्ञ में अपने सहयोग की सात्विक आहुति दो ताकि संसार से अज्ञान, अन्याय और अभाव सदा सदा के लिए समाप्त किया जा सके, क्योंकि आर्यसमाज शान्ति मय विश्व का निर्माण चाहता है। एक बार प्रेम से बोलो वैदिक धर्म की जय।

(शेष पृष्ठ ९ का)

मानने वाले हजारों व्यक्ति निराश और उदास हो कर बैठ जाएं। क्या यह लज्जा की बात नहीं है?

निराशा में आशा की किरणें, मृत्यु में जीवन का सन्देश ले कर अंधकार में प्रकाश की किरण बनकर आर्यों! उठो! और बदल दो इस संसार के प्रवाह को।

दुनियां बीमार है। तड़प तड़प कर मृत्यु की ओर जा रही है। और तुम चुपचाप देख रहे हो। क्या यह ठीक है?

औषधि होते हुए भी बीमार को मरते रहने देना, क्या पाप नहीं है? न होने दो यह पाप। यह समय की मांग है।

स्वयं आत्मशुद्धि करो, चलो! बढ़ो! विश्व शुद्धि के लिए यह हमारी इच्छा है। पर क्या आर्य जनता परा कर सकोगी?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० दे० ब० वाजपेयी

पेट, गैस रोग व उपचार

यह एक कठिन रोग है। ऐसा नहीं कि असाध्य ही हो बल्कि साध्य है, लेकिन मेरा मतलब यह है कि इस रोग से लगभग ३० प्रतिशत रोगी परेशान रहते हैं। किसी भी चिकित्सक के पास जायें आपको ऐसे रोगियों की संख्या शायद मेरी अनुमानित संख्या से भी ज्यादा मिले। चिकित्सक होने के नाते मैं भी इस रोग के कारण काफी परेशान रहा। इस रोग से आक्रांत पचासों लोगों के सम्पर्क तथा भुक्त भोगी होने के कारण जो भी चिकित्सा सम्बन्धी अनुभव प्राप्त हुए वे यहाँ प्रस्तुत हैं।

इस रोग का कोई निश्चित कारण अभी तक प्राप्त नहीं। यों तमाम तरह की अटकलें सभी लगाते हैं और किसी एक मत पर निश्चित नहीं हैं। कुछ इसे पाचन संस्थान की गड़बड़ी से उत्पन्न बताते हैं। कुछ वात रोग में गिनते हैं। कुछ पाचन रसों की कमी से उत्पन्न बताते हैं। बहर-हाल कारण कुछ भी हो, चूंकि यह रोग पाचन संस्थान से सम्बन्धित है अतः पाचन की गड़बड़ी ही इस रोग का मुख्य कारण हो सकती है।

प्रायः सभी रोगियों में इसके निम्न लक्षण मिलते हैं। मंदाग्नि, भोजन करते ही या कुछ बाद में पेट में जबर-दस्त वायु का बनना व पेट में संचित होना और डकारों के रूप में बाहर होना, अपान वायु का निकलना, खाली पेट से डकारें आना, कब्ज, भोजन के बाद टट्टी जाना, पेट में मरोड़ उठना इत्यादि लक्षण होते हैं। इसके अलावा इस रोग के रोगी को तीन अन्य तकलीफों का सामना करना पड़ता है। जब पेट में वायु बननी शुरू हो जाती है तो वह गुदा से न निकल कर ऊपर चढ़ती है। वायु अपने बल के कारण शरीर के कमजोर अंगों पर आघात करती है—

(१) जब यह हृदय को अपना निशाना बनाती है तो हृदय की धड़कन बढ़ा देती है।

(२) जब यह मस्तिष्क में आघात करती है तो मस्तिष्क को शून्य बना देती है।

(३) जब यह शरीर के जोड़ों में आघात करती है तो जोड़ों का दर्द पैदा कर देती है, जब तक यह वायु पेट में बनती रहती है या भरी रहती है तब तक ये शिकायतें बनी रहती हैं, जैसे ही वायु का प्रभाव कम होता जाता है वैसे-वैसे तकलीफ भी कम होती जाती है। रोगी बहुत कमजोर हो जाता है। यहाँ तक कि किसी-किसी रोगी का हाड़ मांस भी काफी क्षीण हो जाता है। इसके साथ ही रोगी को बार-बार जुकाम होना, स्वप्नदोष, काम में मन न लगना, शारीरिक थकावट इत्यादि रोगों से भी परे-शान रहना पड़ता है। रोगी के मल में आँव का काफी अंश मौजूद रहता है।

चिकित्सा

इस रोग की कोई भी रामबाण दवा नहीं चूंकि पाचन की खराबी से अपान वायु भ्रष्ट हो जाती है और वह गुदा से न निकलकर डकारों के रूप में बाहर निकलती है, अतः चिकित्सा ऐसी हो जो अपान वायु को दुरुस्त करे। इस रोग की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा आयुर्वेद में है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति इस रोग में न के बराबर प्रभावशाली है।

जो भी रोगी इस रोग से पीड़ित हुए, उन्हें मैंने निम्न प्रकार की चिकित्सा व्यवस्था की सलाह दी। इसके अलावा जितने भी रोगी ठीक हुए उन्होंने भी यही चिकित्सा कार्य-क्रम इस रोग से पीड़ितों के लिये फायदेमन्द बताया।

यदि रोगी को मठा-कल्प ४० दिन या ९० दिन का करा दिया जाय तो निःसन्देह रोगी ठीक हो जायेगा। दूध का कल्प रोगी को नुकसान पहुँचायेगा, क्योंकि किसी-किसी रोगी को दूध वायु पैदा कर देता है। इसके साथ ही किसी-किसी रोगी को दूध के कल्प से कल्प के बीच में ही अरुचि होने लगती है। इसलिये ज्यादा अच्छा मठा ही रहता है।

मठा कल्प में रोगी को निम्न दवाओं का मिश्रण भी दें, इससे रोगी की ताकत बनी रहेगी तथा ज़्यादा कम-जोरी नहीं मालूम पड़ेगी—

स्वर्ण पर्पटी या पंचामृत पर्पटी	—२ रत्ती
शंख भस्म	—६ रत्ती
रजत सिन्दूर	—१ रत्ती
पूर्ण चन्द्र रस	—१ रत्ती

यह एक मात्रा है, सुबह शाम १-१ मात्रा शहद या जीरे के चूर्ण और मठा से दें।

सिर्फ विजय पर्पटी २ रत्ती तथा अभ्रक भस्म १ रत्ती शहद या जीरे के चूर्ण और मठा से देने पर भी फायदा करेगी।

मठा में लवण भास्कर चूर्ण या सोंठ, चीतामूल की छाल, भुना जीरा, आम की गुठली का बीज, इन सबका चूर्ण कर लें तथा थोड़ा सा काला नमक छोड़ लें। जब भी मठा पियें इस चूर्ण को छोड़कर पियें।

इस तरह मठा का कल्प कर लेने से शरीर के सारे दोष दूर हो जायेंगे तथा गैस्ट्रिक ट्रबल जड़ से चली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जायेगी। कल्प समाप्त करने क पश्चात् रोगी को बहुत संयम से रहना चाहिये। यह कल्प करना बड़ा कठिन है अतः किसी वैद्य या जानकार की सलाह या देख-रेख में करना चाहिए। अन्य जानकारी किसी वैद्य से करें, यहाँ देना लेख को अधिक बढ़ाना है।

बहुत से रोगी कल्प के नाम से ही डरने लगते हैं, कहना न होगा कि ऐसे रोगी बहुत कम दवाओं से ठीक हो पाते हैं। उन्हें जिन्दगी भर परहेज रखना पड़ता है और बहुत तकलीफ मिलती है। ऐसे रोगी यदि निम्न चिकित्सा व्यवस्था से चलें तो निश्चित ही एक या डेढ़ वर्ष में बिल्कुल ठीक हो जायेंगे।

(१) मंदाग्नि संहार रस—अशुद्ध भिलावा ३० तोला, घी, शहद एरन्ड तेल ३०-३० तोला, अशुद्ध हिंगुल, लौंग, जावित्री, जायफल, सोंठ, पंचामृत पर्पटी प्रत्येक १०-१० तोला लें। एक लोहे की कड़ाही में पहले आधे भिलावे बिछा दें, इन भिलावों के ऊपर हिंगुल अशुद्ध ही रख दें। अब बाकी बचे भिलावों से हिंगुल को ढंक दें। अब कड़ाही में घी, शहद, एरन्ड तैल छोड़ दें। कड़ाही को अग्नि प्रज्वलित कर चूल्हे पर चढ़ा दें। आग तेज जलावें ताकि कड़ाही में पड़े भिलावे जलने लगें। यदि भिलावे न जलें तो इन्हें एक जलती लकड़ी से जला देना चाहिये। जब भिलावे भस्म हो जायें तब स्वांग शीतल होने पर हिंगुल को निकाल लें। भिलावे की भस्म फेंक दें, हिंगुल को खरल कर लें फिर इसमें लौंग, जावित्री, जायफल, सोंठ का कपड़छन चूर्ण तथा पंचामृत पर्पटी मिला दें तथा पानी के साथ मर्दन करें... पश्चात् दो-दो रत्ती की गोली बना लें। (आ० सा० सं० से)

दही का पानी निकालकर १ गोली सुबह ७ बजे खाली मुंह खायें, इस रस के खाने के बाद लगभग ८ बजे १ खुराक पंचामृत पर्पटी जीरे के चूर्ण से मठा के साथ लें। मठा में पूर्वोक्त चूर्ण मिला लें। ३-३ घण्टे पश्चात् अर्थात सुबह ८ बजे दोपहर ११ बजे, २ बजे दिन, ५ बजे शाम तक बारी-बारी से जितनी इच्छा हो उतना मठा पियें। इस बीच कोई भी चीज खाना या पीना कतई मना है केवल मठा ही पीना चाहिये।

अब ८ बजे रात्रि को हाथों पोई हुई रोटी, परवल, लौकी, सोया, मेथी, अरहर, मूंग की दाल, आलूबुखारा की चटनी का ही भोजन करें। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी पदार्थ न लें। सब्जी में गर्म मसाला, चिकनाई इत्यादि न हो, घी से ही हल्की छौंक मार देनी चाहिये। भोजन धीरे-धीरे चबाकर अच्छी तरह सेवन करना चाहिए। भूख से आधा ही भोजन करें। भोजन के अन्त में पाव भर मठा अवश्य लें, पानी ज्यादा न पिएं तो अच्छा है।

भोजन के पश्चात् निम्न औषधियां लें—

हिंग्वष्टक चूर्ण आधा माशा
वज्र क्षार चूर्ण आधा मासा
बिल्वादि चूर्ण आधा माशा

यह एक मात्रा है, इस चूर्ण को फांक कर ऊपर से १ तोला कुमारी आसव तथा १ तोला कुटजारिष्ट बराबर जल मिलाकर लें। भोजन के पश्चात् १०० कदम अवश्य टहलें, फिर विश्राम करें।

संयम, नियम, दिनचर्या, रात्रि चर्या तथा ऋतुचर्या का कड़ाई से पालन करें। यदि वायु के कारण हृदय स्पन्दन हो, हृदय में कमजोरी महसूस होती हो, जोड़ों में दर्द हो, निद्रा न आती हो, मस्तिष्क शून्य-सा अनुभव हो तो योगेन्द्र रस १ रत्ती तथा जवाहर मोहरा १ रत्ती इसकी दो खुराक बनाकर दिन के १ बजे तथा रात्रि को सोते वक्त शहद से लें। जब भी इस तरह की तकलीफ बढ़ जाय उस वक्त भी सावधानी के तौर पर १ खुराक दवा ली जा सकती है।

इस तरह के चिकित्सा क्रम को बराबर पालन करते रहने से रोगी कुछ महीने में ठीक हो जायेगा।

कुछ अन्य प्रकार के रोगी होते हैं जिन्हें हल्की सी तकलीफ रहती है। ऐसे रोगी को बवासीर की तकलीफ हो सकती है और इसी कारण अपान वायु उदर में ही रुक जाती है। ऐसे रोगी को बाहुशाल गुड़ सेवन करायें तथा प्रेपरेशन एच मलहम लगाने को दें।

कुछ रोगी जिन्हें कभी-कभी गैस उठने की शिकायत रहती है उन्हें सुबह खाली मुंह नींबू की शिकंजी दें तथा भोजन के बाद कुटजारिष्ट इत्यादि देना चाहिये।

यदि किसी समय अचानक गैस का उपद्रव खड़ा हो जाय तो आधे पाव पानी में नींबू का रस तथा दो रत्ती खाने का सोडा छोड़कर दें। कुछ मिनट में आराम आ जायेगा। यदि १ से ५ मिनट के अन्दर फायदा न हो तो दुबारा दें अवश्य फायदा होगा। समय पर नींबू ही मिले तो ५-५ मिनट के अन्तर से बार-बार दें। यदि सोडा समय पर हो तो ५ रत्ती पानी के साथ दें। १०-१५ मिनट में चैन आ जायेगा। हिंग्वष्टक चूर्ण वक्त पर मिल जाये तो १ माशा गर्म पानी के साथ या सोडा के साथ मिलाकर दें तथा थोड़ा-सा टहलाइये, अवश्य फायदा होगा।

यदि रोगी को अन्न का भोजन करते ही गैस बनने की शिकायत हो तो उसे गेहूँ या जौ के आटे में (गैस के रोगी को जौ के आटे की रोटी काफी फायदेमन्द होती है) सौंफ का चूर्ण या अर्क और खाने का थोड़ा-सा सोडा मिलाकर रोटियाँ बनानी चाहियें। यही रोटी खानी चाहिये; कभी भी वायु नहीं बनेगी, गैस के रोगी को कब्ज न होने दें। यदि कब्ज हो तो ईसबगोल की भूसी १ तोला सोते वक्त पानी या बकरी के दूध से दें। रोगी को स्वप्नदोष, सर्दी-जुकाम की शिकायत हो तो शीघ्र उपचार करें, नहीं तो रोगी कमजोर हो जायेगा।

गैस के रोगी को कुछ व्यायाम भी करना चाहिये। योगासन सबसे अच्छे व्यायाम होते हैं।

संसार में सत्य-धर्म-ज्ञान का सन्देश
फैलाने के लिए
दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित
जन-ज्ञान (साप्ताहिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिछले अंक में आप पढ़ चुके हैं, युवक का मंदिर में ठहरना,
उपदेश देने पर पिटना और जाना·····अब आगे पढ़िए—

जनरल जोरावरसिंह

—सय्याह सुनामी

जोरावर के घर का द्वार किसी ने खटखटाया और उसके पिता ने जाकर द्वार खोल दिया।

'नमस्कार ! जोरावर घर पर ही हैं क्या ?'

एक बीस वर्षीय सजीले युवक, जिसने सुन्दर वस्त्र पहने हुए थे और एक शानदार तलवार लटकायी हुई थी, यह प्रश्न किया था।

'आओ देव, बाहर से कब आए ? कुशल तो हो ?'

'हाँ ठाकुर काका, आपका आशीर्वाद है। परसों लौटा था, कल एक काम में लगा रहा अतः आ न सका। यहाँ तो सब कुशल मंगल है न ?'

'परमात्मा की कृपा है भैया। जोरावर तो रघुनाथ मन्दिर के समीप बहेड़े के वृक्ष के नीचे मिलेगा। वहाँ न हो तो फिर गजसिंह जी की झोंपड़ी के समीप वाले अखाड़े में देख लेना।'

'वहीं कोई काम-धंधा करने लगा है क्या ?'

'अभी तक तो कुछ नहीं करता, यहाँ के द्वारपाल के यहाँ नौकरी के लिए आवेदन-पत्र भेजा था। उसने उत्तर दिया कि मुझे जितने सैनिक रखने का अधिकार है उतने तो मेरे यहाँ हैं, अधिक भर्ती करने का मुझे अधिकार नहीं।'

'अच्छा मैं उससे मिलता हूँ।'

'कुछ जलपान कर जाओ।'

'नहीं काका, धन्यवाद ! फिर दर्शन करूँगा।'

जोरावर का मित्र श्रीदेव पहले तो मन्दिर के निकट पहुँचा, किन्तु जोरावर उसे वहाँ न मिला। वहाँ से वह अखाड़े पर पहुँचा, जहाँ जोरावर एक ओर मालिश कर दण्डबैठक करने में लगा था। '···अरे जोरा पहले ही परमात्मा ने इतना हृष्ट पुष्ट शरीर दिया है, क्या हाथी ही बनकर बैठोगे ?' श्रीदेव उसे देखते ही बोल उठा।

'आओ श्रीदेव, कब आए तुम ?'

'कल ही तो देखा और आज तुमसे भेंट करने चला आया। परन्तु आज तुम कुछ चिन्तित से प्रतीत हो रहे हो, क्या बात है ?'

'भाई श्रीदेव, बाल्यकाल तो हंसते-खेलते गुजर जाता है। परन्तु युवा अवस्था के प्रारम्भ के साथ ही साथ अनेक चिन्ताएँ मानव को आ चिपटती हैं। कठिन परिस्थितियाँ और दायित्व, अपनी नहीं माता-पिता की आजीविका [illegible] कुछ काम करना तो आवश्यक हो ही जाता है। इन सबके कारण मानव मन सोचने लगता है कि क्या रोजी-रोटी की व्यवस्था करते-करते ही जीवन गल जाएगा अथवा अपने कुछ निजी संकल्प और महत्त्वाकांक्षाएँ भी पूर्ण हो सकेंगी।'

'तो क्या सोचा है अपनी आकांक्षाओं और माता-पिता की आजीविका की व्यवस्था दोनों को ही साथ-साथ पूर्ण करने का उपाय ?'

'अभी कुछ विशेष तो नहीं सोच पाया हूँ श्रीदेव। यों ही एक पागलों सरीखी बात मन में आ गई है कि मैं इन शैल मालाओं और पर्वतीय अंचलों का भ्रमण करना चाहता हूँ।' उसने अपना हाथ उत्तर की ओर फैलाया, जैसे वह उसे अपनी बाँहों में ही भर लेना चाहता हो।

'अवश्य घूमो भैया !'

'क्या तुम्हें इन क्षेत्रों का विवरण पता है ?'

'क्या मुझे ! अरे मैंने तो इनका चप्पा-चप्पा छान मारा है। बोलो किस-किस पर्वतमाला का विवरण सुनाऊँ ! कंचनजंघा, धौलगिरि, मानसरोवर, नागा पर्वत, अन्नपूर्णा, नन्दादेवी, चौखंभा, त्रिशूल, नीलकंठ, बद्री केदार, और इनसे भी आगे है कैलाश पर्वत और मान्धाता···।'

'ये सभी पर्वत तुमने देखे हैं श्रीदेव ?'

'इतने ही नहीं अपितु मैं तो उधर कुल्लू, कांगड़ा, स्पीति, लाहौल, कुमाऊँ, सिक्किम, भूटान तक घूम आया हूँ। इधर कश्मीर, स्कर्दू, किश्तवाड़ा, सिकियांग, लद्दाख ही नहीं तिब्बत भी मैंने देखा है। मैं काराकुरम, लचाला, रोहतांग, शोफलो, जोमक और जोजीला दर्रे में से अपने व्यापारिक काफिले लेकर गुजरा हूँ। मैंने भागीरथी, जान्हवी, अलखनन्दा, मन्दाकिनी, यमुनोत्री का पवित्र जल भी ग्रहण किया है। इसके जल में अभी मैदानों की धूल नहीं। मैंने अमरनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ, गौरीकुण्ड, गंगोत्री और मानसरोवर जैसे दुर्गम तीर्थों के भी दर्शन किए हैं। मैंने बौद्ध मठों और गुफाओं में भी पूजा वन्दना की है। डांडी में बैठा हूँ तो टट्टुओं की भी सवारी की है और याकों पर उनके सींग पकड़कर सवारी गांठी है। तिब्बती ऊँटों पर भी चढ़ा हूँ। मैंने वनैले बाकरों का शिकार किया है तो कई कस्तूरी हिरणों का आखेट भी। मैंने लोहे के देगों में उबलती चाय का स्वाद भी चखा है तो वर्षों से बर्फ में दबाकर रखे मदिरा के घड़ों से भी दो घूंट लेकर उनका रसास्वादन किया है। सुरा गायों की पूँछें, नीलम पशमीने और लोइया नमक तथा तम्बाकू, पता नहीं क्या-क्या मैं इधर से ले गया हूँ और क्या-क्या वहाँ से यहां की मंडियों में लादकर लाया हूँ···।'

'तब तो बहुत जानकारी है तुम्हें।'

'घर से बाहर निकलकर मनुष्य एक दिन में ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उतनी जानकारी प्राप्त कर लेता है कि घर में रहकर वह वर्ष-भर में भी नहीं कर पाता।'

'मैं भी इन्हीं पर्वतों का भ्रमण करना चाहता हूँ।'

'किस उद्देश्य से ? क्या केवल तीर्थाटन की दृष्टि से ?'

'तीर्थ यात्रा तो नहीं। वरन् यों ही सैर-सपाटे के लिए।'

'क्या केवल मनोरंजन के लिए ही ?'

'मनोरंजन नहीं किन्तु—(कुछ सोचकर, रुककर) 'यह, पर्वत जैसे मेरी प्रतीक्षा में हैं···खैर।'

अच्छा तो पहले कश्मीर जाओ। स्वर्गोपम भूमि कश्मीर। सेव, खुबानी, आलूबुखारा, केसर, वासमती पुष्पों से सुगन्धित घाटी। झील में तैरती नौकाएँ रहने के लिए हैं, कोहकाफ पर्वत की सुन्दरियों को भी मात करने वाली सुकुमारियाँ प्यार करने को। अब तुम से छिपाऊँ भी क्या ? कश्मीर में एक युवती पर मेरी दृष्टि पड़ी तो शरीर में कम्पन-सा हो आया। गुलाब का फूल, चाँद का टुकड़ा, नेत्रों की शीतलता। मन की शान्ति थी वह। मैं तो उसके पीछे पागल-सा ही हो गया परन्तु चाँदी के दो गहनों और पाँच स्वर्ण मुद्राओं में काम बन गया। व्यापार के लिए गया था वहाँ। गया भी पन्द्रह दिन के लिए ही था। किन्तु उसी युवती के घर पर पड़े रहकर दो मास बिता दिये। अब भी जब कभी कश्मीर जाना होता है तो उसी के पास ठहरता हूँ। यद्यपि अब उसका विवाह हो गया है परन्तु मेरे लिये अब भी कोई रोक-टोक नहीं। जब भी कभी जाता हूँ तो बड़े व्यापारी साहब आए, बड़े व्यापारी साहब आए कहती हुई मेरे स्वागत और सेवा के लिए दौड़ी फिरती है। आनन्द स्थली है कश्मीर, केवल जेब में पैसा होना चाहिए। यदि पैसे का अभाव अनुभव करो तो किश्तवाड़ और स्कर्दू चले जाओ। एक से एक बढ़कर मृगनयनी दिखाई देगी। युवतियों के लिए प्रेम-पाश फैलाओ और उनके माता-पिता के लिए मजदूरी करने लग जाओ। उधर सिकियांग, लद्दाख और तिब्बत में भी कोई-कोई अच्छी चीज मिल जाती है। परन्तु मित्र ! मुझे उनके नैन-नक्श नहीं भाते।' श्रीदेव अपनी धुन में यह सब-कुछ कहता जा रहा था। वह फिर बोला, 'परन्तु एक बात का ध्यान अवश्य रखना ! लद्दाख और तिब्बत की ओर तन्त्र-मन्त्र बहुत चलता है। कहीं-कोई तांत्रिक नारी तुम्हें याक या बकरा ही न बना दे और तुम्हीं पर सवारी करते फिरे।'

'क्या बेकार की बातें कर रहे हो ! तुम्हें तो नहीं बनाया किसी ने याक अथवा बकरा ? वस्तुतः तुम्हारे सरीखे धनी व्यापारियों ने ही तो बदनाम कर दिया है हमें।'

'अरे, यह सुरा-सुन्दरी का सिलसला तो युगों से चलता आया है। विदेशों में जाकर तो सभी दूसरे भी ऐसा करते हैं। क्या समझते हो कि हमारे यहाँ आकर परदेशी रंग रलियाँ नहीं मनाते···और।'

'तुम तो हँसी समझते हो भाई। इन प्रदेशों में निस्सं-देह ऐसे नर-नारी हैं जो तान्त्रिक विद्याएँ जानते हैं। एक तान्त्रिक लामा बिना बादलों के वर्षा कर सकता है। वह अँगुली निर्देश मात्र ही करता है तो हजारों मन वजनी हिमखंड लुढ़कते चले जाते हैं।'

'झूठ थोड़ा ही बोलो तो ठीक रहे।'

'चलो, नहीं मानते तो न मानो ! परन्तु एक बार मेरे साथ चलो तो यह सब ही नहीं अपितु इससे भी कुछ अधिक ही दिखा दूं। और हाँ ! एक बात तो मैं तुमको बताना भूल ही गया था, वह यह कि मैं लद्दाख जाकर बौद्ध बन गया हूं।'

'क्या यह सच है ?'

'पूर्णतः सत्य ! बात यह हुई कि एक गोम्फा में मेरी भेंट एक कोमो स्त्री से हो गई। यह बौद्ध भिक्षुणी थी। सम्पूर्ण लद्दाख में मुझे वही सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी प्रतीत हुई। वह मेरे मन में बस गई। मेरा पौरुष युक्त सौंदर्य भी उस पर जादू कर गया। वह अपना प्रार्थना-चक्र एक ओर डाल मेरे साथ हो ली। तदुपरान्त मैंने भी यथाविधि बौद्ध मत ग्रहण कर लिया और इसमें हानि ही क्या है ? थोड़ी आत्मीयता और सुगमता बन जाती है। श्रीनगर की उस युवती को मैंने अपना नाम सलीम जू बताया था। बड़ा आनन्द रहा। आखिर इसमें बिगड़ता ही क्या है ?'

'श्रीदेव तुम भी एक आफत ही हो। मेरा विचार है कि यदि खाद्य एवं अन्य पदार्थों का व्यापार छोड़कर स्त्रियों का ही व्यापार करने लगो तो कहीं अधिक कमाई होने लगेगी।'

'हाँ, हाँ ! विचार तो ठीक ही है। सुना है कि इन दिनों पंजाब का राजा रणजीतसिंह बहुत बढ़-चढ़ रहा है। कई बार मन में आया भी है कि दो-चार सुन्दरी और लावण्यमयी तुर्किस्तानी बालाएँ उसके दरबार में लेजाकर उसे भेंट कर दूं। और युवतियाँ भी ऐसी कि जिनके समक्ष पंजाब का सारा सौन्दर्य पानी भरने लग जाए। परन्तु मित्र इन बादशाहों और राजाओं से मैं थोड़ा दूर ही रहना चाहता हूँ, जो एक गाली पर जागीर प्रदान कर दें और आशीर्वाद पर सूली चढ़वा दें। परन्तु बात तो तुम्हारे पहाड़ों पर सैर के लिये जाने की हो रही थी। अब की बार मैं जब काफिला लेकर जाऊँ, तो तुम···।'

श्रीदेव की बात अभी समाप्त भी न हो पाई थी कि जोरावर की गली में रहने वाली युवती सरजू दौड़ती हुई उनकी ओर ही आती दिखाई दी। वह दूर से ही चीखी—

'जोरावर ! जोरावर !! कैन्थो को शेर ने खा लिया। इस ओर कांगड़े का कोई शेर आ निकला है। कैन्थो अखरोट के वृक्षों के झुंड के निकट अपनी गाएं चरा रही थी कि अचानक ही सिंह ने एक गाय पर आक्रमण कर उसे मार डाला। कैन्थो की चीख भी तरेडू भंगी ने सुनी है जो वहाँ लकड़ियाँ बटोरने गया था। पता नहीं कि बेचारी कैन्थो शेर का ग्रास बन गई है अथवा किसी वृक्ष पर चढ़कर बच गई। शीघ्र चलो तुम वहाँ !'

जोरावर का राजपूती रक्त अकस्मात् [illegible] पड़ा। वह दौड़कर गजसिंह की झोंपड़ी [illegible] बैठा वह अपना फटा हुआ कम्बल सी रहा

CC-0. Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'तनिक एक धनुष और बाणों से भरा तरकश तो दीजिए। इधर एक शेर आ निकला है और उसने एक गाय तथा शायद गाय चराने वाली एक लड़की को भी मार डाला है।'

गजसिंह ने एक धनुष और बाणों से भरा तरकश उसे देते हुए कहा 'लक्ष्य तो ठीक साध लेते हो न भइया!'

'जोरावर का बाण आज तक तो कभी चूका नहीं और न ही उसे खाकर कोई जीवित रह पाया है।' वह सरजू को सम्बोधित करता हुआ बोला। 'तुमने कल मेरे साथ मखौल किया था न। यदि तुम्हारी यह बात भी हंसी ठठ्ठा हुई तो फिर देखना।'

'रघुनाथ जी की सौगन्ध! यह बात बिलकुल सच है। यदि मैं हंसी ठठ्ठा कर रही हूँ तो मेरी देह में कीड़े पड़ें।'

'आओ श्रीदेव! तुम्हें भी शेर का शिकार दिखाऊं!'

ना भैइया!' श्रीदेव मुस्कराता हुआ बोला। मैं तो अब ठहरा बौद्ध। शेर मारने कदापि न जाऊँगा। मेरे धर्म में तो चींटी मारना भी पाप है। अहिंसा परमो धर्मः। यह तलवार तो मैंने दिखावे मात्र के लिए लटका रखी है। यदि तुमने उस शेर को मार डाला तो मैं उसकी खाल अवश्य मोल ले लूंगा। पांच-दस रुपये जो भी मांगोगे तुम्हें अवश्य दे दूंगा। एक बौद्ध लामा ने मुझे एक यन्त्र बनाकर दिया है, जिसके प्रभाव से मुझे प्रत्येक कदम में लाभ ही होगा। मैं यह खाल उसे ही उपहार स्वरूप भेंट कर दूंगा।'

'चलो जोरावर!' सरजू बोली और जोरावर आगे-आगे तथा सरजू उसके पीछे-पीछे अखरोट के वृक्षों के झुंड में दौड़ने लगे। जोरावर और सरजू दूर निकल गये। परमात्मा का धन्यवाद कि कैन्थो जीवित थी। दूर से ही वह ऊंचे वृक्ष पर चढ़ी हुई दिखाई दी। जोरावर ने हाथ के संकेत से पूछा कि शेर कहाँ है? और उसने भी इशारे से ही उत्तर दिया कि वह वृक्ष के समीप ही है।

जोरावर ने सरजू को हाथ के संकेत से पीछे ही ठहरने को कहा और स्वयं जूते एक ओर उतार दबे पांव उक्त वृक्ष की ओर बढ़ा। झाड़ियों और वृक्षों पर सतर्कता-पूर्वक दृष्टि डालता हुआ वह आगे पग धरता जा रहा था। अभी वह बहुत दूर नहीं निकला था कि उसे शेर एक झाड़ी के निकट दिखाई पड़ गया। वह शेर अप्रत्याशित संकट से सर्वथा निश्चिंत अपने शिकार के आहार में मगन था। ऐसा लगता था कि वह अभी भी भूखा है।

एक टहनी तक को भी न हिलने देता हुआ जोरावर धीमे-धीमे पग धरता एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचा जहाँ से शेर के सिर पर निशाना साधा जा सकता था। बिना किसी प्रकार की आवाज किये उसने तरकस से एक बाण निकालकर उसे साधा और प्रत्यंचा चढ़ाई। शेर के माथे का लक्ष्य साधा और धनुष को पूरे बल सहित खींच कर बाण छोड़ दिया। वह बाण उस शेर के ठीक सिर में जाकर लगा।

बाण के लगते ही शेर अपने स्थान पर उछला। परन्तु बाण उसके कपाल में इतनी गहराई तक उतर चुका था कि अब उसके संभलने और आक्रमण करने का प्रश्न ही उपस्थित न होता था। फिर भी जोरावर ने एक बाण और साध कर छोड़ दिया। दूसरे बाण के प्रहार से शेर एक बार तो दहाड़ा, फिर उछला और धरती पर गिरकर लोट-पोट होने लगा। कुछ क्षण तो उसकी टांगे और पूंछ आदि हिलती दिखाई दीं किन्तु फिर वह पूर्णतः शान्त हो गया।

'जोरावर, मुझे थाम कर वृक्ष के नीचे उतार। नहीं तो मैं नीचे गिर पड़ूंगी।' कैन्थो ने वृक्ष से उतरने का प्रयास करते हुए कहा। उसके हाथ-पांव भय से थर-थर कांप रहे थे।

जोरावर वृक्ष के तने से लग कर खड़ा हो गया। कैन्थो ने वृक्ष से नीचे उतरते हुए अपना पांव उसके कंधे पर रखा और अपना हाथ भी उसे पकड़ा दिया।

'संभल कर बहन, संभल कर! भगवान् की बड़ी अनुकम्पा है कि तुम सकुशल हो।'

जोरावर ने किसी नन्हे बालक के समान ही कैन्थो को भी अपने दोनों हाथों में थामा और फिर वृक्ष से उतार कर धरती पर खड़ा कर दिया। कैन्थो का शरीर अब भी थर-थर कांप रहा था।

'तुम्हें पता कैसे लगा?'

सरजू बोली 'तरेडू भंगी इधर लकड़ियां बटोरने आया था। उसने शेर की दहाड़ और तुम्हारी चीख सुनी तो दौड़कर मुझे बताया। मैंने तत्काल विचार किया कि जोरावर के अतिरिक्त अन्य कोई इस संकट की घड़ी में सहायक नहीं हो सकता। अतः मैंने तत्काल इसकी खोज की और तुम्हारे भाग्य से यह मिल भी गया। परमात्मा इसे तुम्हारी जैसी ही सुन्दर बहू दे।'

सरजू इस खतरे और घबराहट के वातावरण में भी मखौल करने से बाज न आई।

कैन्थो ने अपनी आँखें नीची कर लीं, जिनमें लज्जा और कृतज्ञतावश दो अश्रुकण छलक उठे थे। परन्तु जोरावर की दृष्टि उसकी ओर न गई। वह उस ओर बढ़ा जहाँ वह शेर मरा पड़ा था। पीछे से झाड़ियों में सरसराहट हुई, क्योंकि श्रीदेव के नौकर इस शेर की खाल लेने के विचार से वहां आ पहुँचे थे।'

'अरे! शेर मार डाला तुमने!'

'हां!

'वाह! वाह!! क्या कमाल के वीर पुरुष और निशानेबाज हो।' यह कहकर वे शेर को उठाने के लिये आगे बढ़े और बोले 'लो ये दस रुपये, श्रीदेव जी ने तुम्हारे लिए दिये हैं। वे आज और कल नहीं परसों तुम्हें मिलेंगे। ले जाएं हम इसे उठा कर।'

'हां! हां, ले जाओ!' कहते हुए उनसे रुपये ले लिए। उसने सरजू से लेकर अपने जूते पहने और नगर की ओर चल पड़ा। दोनों लड़कियां भी उसके पीछे-पीछे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चल रही थीं। भयभीत गौएं भी तब तक एकत्रित हो चुकी थीं। भय के वशीभूत उनके पुट्ठों में अभी भी कंपन हो रहा था। बस्ती से कितने ही लोग भागते हुए उसी ओर आ रहे थे। वे उन्हें मार्ग में ही मिले।

'सुना है कोई शेर आ निकला है इधर!'

'फिर मिला कि नहीं!'

जोरावर के मन में न जाने क्यों कटुता भर उठी थी। वह खीझपूर्वक बोला 'नहीं मिला।'

किन्तु इसी बीच सरजू बोल उठी, 'मिल गया था, उसे जोरावर ने मार डाला है।'

'सच!'

'अरे भाई नहीं। मैंने कोई शेर वेर नहीं मारा है। मैं तो जब उस ओर पहुंचा तो वह मरा हुआ ही पड़ा था। संभवतः उन्हीं लोगों ने उसे मारा है जो अब उसे उठा कर ला रहे हैं।'

वह पुनः बहेड़ के उसी वृक्ष के नीचे जा बैठा। वह सरजू और कैन्थो से बोला 'सुनो! अब तुम घर जाओ! जब कोई पूछे तो किसी से यह नहीं कहना कि मैंने शेर मारा है, यही कह देना कि हमें कुछ पता नहीं। अन्यथा लोग आकर मेरी खोपड़ी चाट लेंगे।

सरजू बोली 'हम से कोई पूछेगा तो हम झूठ नहीं बोलेंगे। क्यों री कैन्थो? भला हमें क्या पड़ी है कि हम व्यर्थ में ही झूठ बोलें। हम तो साफ-साफ कह देंगी कि कि शेर को जोरा ने ही मारा है। और साथ ही मेरी सखी कैन्थो को भी अपने प्रेमबाण से घायल कर दिया है।'

'सरजू! तुम परमात्मा के लिए चली जाओ। तुमने संकट के समय सहायता मांगी थी, मुझ से जो हो सकता था मैंने कर दिया। तुम्हारी हंसी और यह उपहास मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। आज मेरी मनःस्थिति ठीक नहीं है।'

'जाने को तो हम चली जाती हैं, परन्तु याद रखना! जब तक तू विवाह नहीं करेगा तब तक तेरे मस्तिष्क की कोई न कोई चूल ढीली ही रहेगी। और घर वाली ही आकर उन चूलों को ठीक कर सकती है।' जोरा ने सुना और मुस्करा पड़ा।

दोनों लड़कियां चली गईं। श्रीदेव का घर बस्ती के दूसरी ओर था। उसके नौकर शेर को उधर ही ले जा रहे थे। इसीलिए कोई व्यक्ति इस ओर न आया। जोरावर चिन्तन की गहराइयों में उतर गया। उसके नेत्रों के समक्ष शेर की वह भयानक सूरत उभर उठी थी जब वह घायल होकर झाड़ियों और घास के बीच पड़ा तड़प रहा था। कभी उस रहस्यमय व्यक्ति का चेहरा उसके नेत्रों के समक्ष उभर उठता था जिसने उसे कहा था कि उत्तर और पूर्व के पर्वतों का भ्रमण कर इनका ज्ञान प्राप्त कर लो। पता नहीं कब यह जानकारी तुम्हारे किसी काम आ जाए। और कभी उसके समक्ष ज्ञानसागर जिसने कहा था कि एक ब्राह्मण का जीवन वैसा नहीं होना चाहिए, जैसा कि वे व्यतीत कर रहे हैं। तदुपरान्त उसे ध्यान आ जाता था विलासी और श्रीसम्पन्न श्रीदेव का, जो जीवन के हर क्षेत्र में ही व्यापारी बनकर रह गया था। वह लद्दाख में बौद्ध बन जाता था तो कश्मीर में जाकर मुसलमान। परन्तु बन वह कुछ भी न पाता था। उसके पीछे लद्दाखी नवयौवना प्रार्थना चक्र घुमाती और कश्मीर में मुस्लिम युवती बड़े व्यापारी साहब आए की ध्वनि गुंजाकर आवभगत करती दिखाई देती थी।

किसी की पदचाप ने उसके चिन्तन का क्रम भंग कर दिया। यह आगन्तुक थे उसके पिता हरजीसिंह।

'बेटा जोरावर!'

'हाँ पिता जी!'

'आज भोजन नहीं करोगे क्या?'

'चलता हूँ पिता जी!' आप चलिए, मैं भी आपके पीछे-पीछे आ रहा हूँ।'

'मैं तुम से एक बात कहना चाहता हूँ।'

जोरावर चौंक कर पिता के मुख की ओर देखने लगा। जिस पर संयम के साथ ही विवशता और विषाद की छाया भी विद्यमान थी।

'कहिए पिता जी!'

'देखो बेटे! अब तुम प्रभु की कृपा से जवान हो गए हो। कोई काम-धंधा आरम्भ कर दो। दो पैसे कमाने लगोगे तो अच्छा होगा। मुझ अकेले की कमाई से तो अब परिवार का संचालन नहीं हो सकता। तुम्हारा भाई सरदार कुछ करता अवश्य है, परन्तु तुम भी कुछ अर्जित करने लगोगे, तो बड़ा सहारा मिल जाएगा मुझे। यों भी इस प्रदेश में तो अब सर्वत्र निर्धनता और दारिद्रय का ही साम्राज्य स्थापित होता जा रहा है। पारस्परिक गृह युद्ध, पंजाबी राजाओं की आपसी मार-धाड़ में जनता पर दंड, सरकारी कर्मचारियों की लूट खसोट, जीवन के लिए एक विपदा बन कर रह गए हैं।'

'मैं अवश्य ही कमाने के लिए कहीं चला जाऊंगा।'

'मेरे विचार में यदि तुम अपने मित्र श्रीदेव के साथ व्यापार के धंधे में लग जाओ तो दो चार वर्षों में पर्याप्त धन अर्जित कर सकते हो। कल तक तो उसके परिवार वाले भी भूखे प्यासे दिन काटते थे। परन्तु अब तो वे स्वर्ण मुद्राओं में खेलते हैं। वह आज कल यहीं आया हुआ है। तुम्हें मिलने घर पर भी आया था, शायद तुम से भी उसकी भेंट हुई हो।'

'पिता जी, उसके साथ मिलकर तो मैं काम नहीं कर सकता। वह मेरा मित्र भले ही हो परन्तु उसके और मेरे स्वभाव में भारी अन्तर है। फिर मैं राजपूत होकर बनिए और महाजनी का काम कर भी कैसे सकता हूँ।'

'वह भी तो राजपूत ही है। आजकल राजपूत खेती और व्यापार भी करते हैं और ब्राह्मण सेना में भर्ती हो रहे हैं।'

(शेष पृष्ठ १८ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व० चन्द्रगुप्त वेदालंकार

जातियों का उत्थान और पतन

● ● ● ●

महाकवि कालिदास ने उत्थान-पतन का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया है उन्होंने लिखा है—

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम
आविष्कृताऽरुण पुरस्सर एकतोऽर्कः।
तेजो द्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्याम्
कालो नियम्यत इवेह दिशान्तरेषु॥

एक ओर चन्द्रमा अस्त हो रहा है और दूसरी ओर सूर्य आकाश में आ रहा है। विधाता ने उदय और अस्त होते हुए दोनों प्रकाश पुंजों के बीच मानो समय को सीमित कर दिया है। आप सूर्य और चन्द्रमा के स्थान पर किन्हीं भी जातियों के नाम रखकर इसी श्लोक को बोल लीजिए। आप देखेंगे कि समय के विषय में कही गई उक्ति जातियों पर सत्यरूप में चरितार्थ होती है।

मानव जाति के इतिहास पर दृष्टि डालते ही यह बात साफ दिखाई देती है कि निर्बल नष्ट हो जाते हैं और बलवान् बच जाते हैं। जातियाँ उठती हैं और अपने समय और माप के अनुसार उठकर फिर गिर जाती हैं। उनके स्थान पर दूसरी जातियाँ आ जाती हैं। वे भी उसी तरह उन्नत होती हैं और फिर लुप्त हो जाती हैं। कई हजार वर्ष पूर्व उफातु (यूफ्रेटस) और तग्रा (टाइग्रस) नदियों की अन्तर्वेदी में सुमेरियन जाति का प्रादुर्भाव हुआ। चार हजार वर्ष तक यह जाति सिर उठाये रही। सुमेरियन लोग सभ्यता में ऊँचे थे। वे लिखना पढ़ना जानते थे, उनके बनाये पुस्तकालयों के अवशेष आज भी उपलब्ध होते हैं; कला में भी उन्होंने उन्नति की थी। इनके जहाज दूर-दूर तक व्यापार करते हैं। चालीस सदियों तक सुमेरियन लोगों का बोलबाला रहा। इसी बीच सैमेटिक जातियाँ खड़ी हुईं और उन्होंने सुमेरियन साम्राज्य को नष्ट कर सैमेटिक साम्राज्य की स्थापना की। चिरकाल की सम्पत्ति और सुखभोग ने सुमेरियन जाति की जीवन शक्ति को नष्ट कर दिया। यही कारण है कि बलवान सैमेटिक लोगों की टक्कर लगते ही चालीस सदियों से जमा हुआ साम्राज्य लड़खड़ा कर गिर पड़ा। सुमेरियनों के बाद असीरियन, चैल्डियन और इजिप्शियन एक के बाद एक जाति चढ़ती और उतरती रही। इस चढ़ाव-उतार में यह देखा गया कि जो जाति उन्नति के शिखर पर पहुंची उसे वैभव ने प्रमादी बना दिया। सभ्यता, शिक्षा और विभूति से वह आगे बढ़ गई परन्तु संग्राम करने की शक्ति खो बैठी, पिछड़ गई। यही कारण है कि जब किसी शक्तिशाली जाति ने उस पर चोट की तब गिर गई और उसकी लाश पर दूसरी जाति खड़ी हो गई।

ईसा से ५० वर्ष पूर्व ईरानी साम्राज्य खड़ा हुआ। उसकी एक सीमा ग्रीस से और दूसरी भारत से टकराती थी। एशिया, यूरोप और अमेरिका—तीनों पद्धतियों पर ईरानी साम्राज्य फैला हुआ था। ईरान की उठती हुई शक्ति ने अपने से पूर्ववर्ती साम्राज्यों के मस्तक पर पाँव रख दिया था। २०० वर्ष तक ईरानी सम्राट् अपनी शक्ति बढ़ाते रहे। इसी समय यूरोप के दक्षिण से एक ऐसी ज्वाला उठी, जिसने ईरान की शान को जलाकर खाक कर दिया। मैसेडोनिया के एक नौजवान सरदार ने, जिसका नाम सिकन्दर था, ग्रीस जीत लिया, ईरान बर्बाद कर दिया, मिस्र पर कब्जा कर लिया और हिन्दुस्तान पर भी उसने चढ़ाई की। जितनी तेजी से सिकन्दर उठा उतना ही शीघ्र उसका पतन हुआ। जातियों और साम्राज्यों का इतिहास यह बताता है कि जब तक उनमें जीतने की शक्ति बनी रहती है, वे चोटें खाकर भी जीवित रहते हैं परन्तु ज्यों ही उनका बल क्षीण हुआ वे बर्बाद हो गए। इस जीवन संघर्ष में बलवान् और समर्थ फलते फलते हैं। इसी को 'योग्यता की विजय' का सिद्धान्त कहते हैं। प्रकृति का नियम ही ऐसा है कि इस संघर्षमय संसार में निर्बलों के लिए स्थान नहीं है।

रोम का उदाहरण लीजिए। रोम का साम्राज्य उन्नति के शिखर तक पहुंचकर भी गिर गया। ईसा से लगभग ६०० वर्ष पूर्व रोम की स्थापना हुई। रोम में ऐट्रस्कम जाति के राजा राज्य करते थे। रोम के आस-पास के किसानों ने मिलकर ऐट्रस्कम राजा को मार भगाया। इस प्रकार स्वतंत्र रोमन प्रजातंत्र की स्थापना हुई। ५०० वर्ष तक रोमन प्रजातंत्र को शत्रुओं से लड़ना पड़ा। अन्त में ऐट्रस्कम लोगों को हार माननी पड़ी। इसके बाद गाल जाति के लोग टिड्डी दल की तरह टूट पड़े। जैसे जंगल में भयानक अंधड़ तबाही मचाता है, उसी प्रकार गाल घुड़सवारों ने रोम को भी तहस-नहस कर दिया। यही जातियों की परीक्षा का समय होता है। उस समय रोम में जीवन मौजूद था। इसलिए उसने गाल जाति के आक्रमण को सहा और आगे चलकर बड़े लम्बे संघर्ष के बाद कार्थेज को मटियामेट कर दिया। इसी से रोम के सम्राट् 'संसार के राजा' कहलाए। उन्होंने भूमध्य सागर को 'रोमन झील' बना दिया। परन्तु एक

(शेष पृष्ठ १८ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(शेष पृष्ठ १७ का)

समय ऐसा आया जब रोम भी गिरने लगा। उस समय वह पश्चिमी जगत् का सांस्कृतिक गुरु बन चुका था। रोम की विद्या, शिक्षा और कानून का सिक्का चलता था। रोम के खजाने देश-देशान्तरों की विभूति से भरे पड़े थे परन्तु रोम में जीवन घट रहा था। रोम की शान बढ़ थी, किन्तु जान कमजोर पड़ रही थी। इस संघर्ष-मय जीवन में करुणा की गुंजाइश ही कहाँ है ? कमजोर को मरना ही होगा और बलवान् तब तक जीता रहेगा जब तक वह जीने योग्य है। समय का रथ आगे बढ़ता है। जो गिर गया सो पिस गया और जो खड़ा रहा वह रथ की सवारी करता है। वहाँ न प्रमाद को स्थान है और न आँसुओं की गुंजाइश है। उससे केवल वही बच सकता है जो सावधान हो और चोटें खाकर भी खड़ा रह सकता हो। यही कारण है कि जिस रोम ने यूरोप, एशिया और अफ्रीका पर निरंकुश शासन किया था, ईसा के ५०० वर्ष बाद उनके नाम से केवल बिखरे हुए खण्डहर ही दिखाई दिए। रोम की अतुल सम्पत्ति और उन्नत संस्कृति रोमन साम्राज्य की रक्षा न कर सकी।

बिलकुल यही प्रक्रिया हमारे देश में भी हुई। मौर्यों के बाद काण्व, आन्ध्र, गुप्त, वर्धन और मौखरी साम्राज्य बने और बिगड़े। एक के बाद दूसरा विजेता पहले योद्धाओं को मात देता रहा। अन्त में जब हिन्दू (वैदिक) राज्य का अन्त हुआ, उस समय हिन्दू संस्कृति का संदेश हिमालय और समुद्र को पार करके जापान, कोरिया और चीन से लेकर सुदूर पूर्व के मलाया द्वीप समूह तक फैल चुका था। स्वयं आक्रान्ताओं के धर्म देश अरब में हिन्दू संस्कृति और कला-कौशल ने अपने चमत्कार दिखाये थे, पर ये सब श्रेष्ठताएं हिन्दू राज्य को मिटने से न बचा सकीं। अरब आक्रान्ता आते थे और अपने साथ हिन्दू पंडितों और वैद्यों को ले जाते थे। वे हिन्दुओं के धर्म और बुद्धि की सर्वत्र यशोगाथाएं गाते थे परन्तु ये कीर्ति कलाप हिन्दू-राज्य को नाश से न बचा सके। याद रखिए, अच्छी संस्कृति और श्रेष्ठ धर्म की अनुगामी होने मात्र से जातियाँ नहीं जिया करतीं, जातियाँ जीवन शक्ति से जीती हैं।

(शेष पृष्ठ १६ का)

'किन्तु मेरा निश्चय तो यही है कि मैं अपने धनुष बाण और तलवार की धार से स्वदेश की सेवा करूंगा। क्षत्रिय के लिए तो सैनिक सेवा ही शोभा देती है। इससे जीविका की समस्या का समाधान भी हो जाएगा और देश की सेवा भी।'

जोरावर ने अपने कुर्ते की जेब में हाथ डाला। उसमें सिक्के खनक उठे। वह अपने पिता को सम्बोधित करते हुए बोला 'पिता जी ये लीजिए दस रुपये। आज एक शेर इस ओर आ निकला था। उसे मैंने ठिकाने लगा दिया। उसकी खाल श्रीदेव ने खरीद ली है। उसी का मूल्य हैं ये रुपये।'

'जीते रहो मेरे लाड़ले ! विपन्नता के इन दिनों में तो ये दस रुपये भी एक हजार से कम नहीं। तुम्हें कोई घाव आदि तो नहीं लगा ?'

'नहीं पिता जी ! हां अभी तो आप इन रुपयों से काम चलाइए। मैं सेना में भर्ती हो जाता हूँ। वहाँ से प्रति मास हा आप को कुछ न कुछ भेजता रहूँगा। हो सकता है कि मैं कल ही चला जाऊँ।'

'ऐसी कोई जल्दी नहीं है, जोरावर ! दो चार दिन बाद चले जाना।'

'पिता जी जब जाना ही है तो उसमें आज और कल क्या ?'

पिता का हृदय अपने पुत्र के विछोह का ध्यान कर विचलित हो उठा और ऊपर वृक्ष की एक डाल पर बैठा कोई बड़ा सा पक्षी उड़ चला, जिसके पंखों की फड़फड़-हट से एक कच्चा बहेड़ा टूट कर पिता और पुत्र के पैरों के बीच आ गिरा। (क्रमशः)

प्रबन्धक

जन-ज्ञान साप्ताहिक

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

प्रेरक प्रसंग

गुरुदेव रवीन्द्र का संकल्प

अपने यज्ञोपवीत के अवसर पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रतिज्ञा ग्रहण की थी 'दिवा मा स्वाप्सीः'—'दिन में मत सोना।' उन्होंने अपनी इस प्रतिज्ञा का पूर्ण निष्ठा सहित पालन भी किया।

वृद्धावस्था में जब वह एक बार बीमार पड़ गए तो महात्मा गांधी ने उनसे यह भिक्षा माँगी : 'कृपया भोजन के उपरांत आप दिन में थोड़ी देर के लिए विश्राम अव-श्य किया करें। आपके स्वास्थ्य के लिए ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक है।' गुरुदेव रवीन्द्र ने कथंचित् इसे स्वीकार कर लिया।

इस घटना के उपरान्त एक दिन मध्याह्न आचार्य क्षितिमोहन सेन किसी कार्यवश गुरुदेव से भेंट करने गए त उन्होंने द्वार की झिर्री से देखा कि गुरुदेव लेटे हुए हैं। वे उलटे पांव वापस लौटने को ही थे कि गुरुदेव ठाकुर ने उन्हें पुकारा।

श्रीसेन बोले 'आप विश्राम कर रहे हैं, मैं पुनः आ जाऊँगा।' गुरुदेव ने उत्तर दिया 'नहीं, मैं तो दोपहर में कभी भी नहीं सोता। मैं तो गांधीजी को भिक्षा दे रहा हूँ।'

कौन जानता है कि उस समय जबकि गुरुदेव गांधी जी को भिक्षा प्रदान कर रहे थे, उनके दिया-स्वप्न में किसी कविता की कोई पंक्ति ही चक्कर काट रही हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान जगत्

—ई० एसिमोव

क्या ब्रह्माण्ड में अन्यत्र कहीं जीवन का अस्तित्व है ?

* * * *

ब्रह्माण्ड में अन्यत्र कहीं जीवन के विद्यमान होने की सम्भावनाएं क्या हैं ? अन्य किसी प्रकार का जीवन नहीं, बल्कि उस प्रकार का जीवन जिससे हम पृथ्वीवासी परिचित हैं। यह जीवन इस रूप में होना चाहिए ताकि हम उसे तुरन्त पहचान सकें। इसके साथ ही यह जीवन पृथ्वी पर विद्यमान जीवन से किसी न किसी रूप में जुड़ा हो।

ऐसा जीवन खोजने के लिए हमें ब्रह्माण्ड में किसी ऐसे ग्रह-नक्षत्र को ढूंढ़ना होगा जो पृथ्वी से मिलता-जुलता हो। अभी तक तो ऐसे ग्रह की खोज नहीं हो पायी जिसकी तुलना किसी भी रूप में पृथ्वी से की जा सके। लेकिन, इसके साथ ही यह भी स्वीकार करना होगा कि हमारी पहुंच की परिधि बहुत ही सीमित है। अभी तक हमारी दृष्टि केवल अपने सौरमण्डल में विद्यमान ग्रह-उपग्रहों तक ही पहुंची है। बहुत सम्भव है कि ब्रह्माण्ड में ऐसे ग्रह या उपग्रह हों जिनसे हम अभी तक अपरिचित हों और जो बहुत सीमा तक हमारी पृथ्वी से मिलते-जुलते हों।

ऐसे ग्रहों व उपग्रहों का अस्तित्व होना अवश्य चाहिए। आकाश गंगा में कम से कम १ खरब ३५ अरब नक्षत्र हैं और वर्तमान वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार, इन सबके अपने ग्रह-मण्डल होने चाहिए। इनमें से लाखों नक्षत्रों की तुलना हमारे सौर मण्डल के सूर्य से की जा सकती है। यह भी तर्कसंगत प्रतीत होता है कि इनमें से प्रत्येक के सौर मण्डल में कम से कम एक ग्रह या उपग्रह ऐसा अवश्य होगा जो आकार और तापमान की दृष्टि से बहुत हद तक पृथ्वी से मिलता-जुलता हो।

'रैण्ड कार्पोरेशन' के श्री स्टीफेन एच० डोल एक बार हिसाब लगाने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी आकाश गंगा में पृथ्वी से मिलते-जुलते कम से कम ६४ करोड़ ग्रह या उपग्रह होने चाहिए। यह गणना तो केवल हमारी एक आकाश गंगा के बारे में है जबकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में इसी प्रकार की कम से कम १ खरब आकाश गगाओं का अस्तित्व है।

पृथ्वी से मिलते-जुलते लगभग सभी ग्रहों में किसी न किसी रूप में जीवन का आविर्भाव और विकास हुआ होगा लेकिन हमारे पास यह मालूम करने का कोई साधन नहीं कि इनमें से कितने ग्रहों पर प्रबुद्ध जीवन का विकास हुआ होगा।

[illegible] कुछ समय के लिए मान लीजिए कि श्री डोल की [illegible]ा सही है। यह भी मान लीजिए कि १० लाख ऐसे ग्रहों में से, जिनमें प्राणी जीवन का अस्तित्व और विकास सम्भव है, केवल एक ग्रह पर प्रबुद्ध जीवन का अस्तित्व है। ऐसी दशा में भी, केवल हमारी आकाश गंगा में ही प्रबुद्ध जीवन की कम से कम ६४० विभिन्न नस्लें होनी चाहिएं। इससे भी एक कदम आगे बढ़कर यदि हम यह भी मानें कि हम केवल औसत बुद्धि वाले प्राणी हैं तो यह कहा जा सकता है कि उक्त ६४० नस्लों में से कम से कम ३२० नस्लें हमसे अधिक प्रबुद्ध होनी चाहिए।

फिर भी, ये नक्षत्र हमसे बहुत अधिक दूरी पर हैं। यदि सभी लाखों ग्रह, जिन पर जीवन का अस्तित्व सम्भव है; एक-दूसरे से समान दूरी पर स्थित हों तो भी हमारे सबसे निकट वाला ग्रह कम से कम ५० प्रकाश-वर्ष की दूरी पर स्थित है। हमसे अधिक प्रबुद्ध प्राणियों वाला निकटतम ग्रह सम्भवत: हमसे ६,५०० प्रकाश वर्ष की दूरी पर होगा।

ऐसी स्थिति में हम यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि क्या हमारे सौर मण्डल में स्थित किसी ग्रह-उपग्रह में जीवन के विद्यमान होने की कोई सम्भावना है ? हमारे पड़ोस में स्थित अन्य संसार हमसे सर्वथा भिन्न प्रतीत होते हैं।

इस प्रसंग में यह उपयुक्त ही होगा कि हम पहले इस बात पर विचार करें कि जीवन के विकास के लिए न्यूनतम आवश्यकताएं क्या हैं ? सबसे पहली आवश्यकता यह है कि कार्बन पर्याप्त परिमाण में विद्यमान हो क्योंकि इसके अणुओं से ही जीवन का उद्भव करने वाले व्यूहाणुओं का प्रादुर्भाव होता है। इसके अलावा, जहां तक हम जानते हैं, इस कार्य के लिए केवल कार्बन-अणु ही उपयुक्त होते हैं। यह कार्बन डायआक्साइड के रूप में या मेथेन के रूप में हो सकता है।

इसके अतिरिक्त जीवन के विकास हेतु पर्याप्त मात्रा में द्रव पदार्थों की आवश्यकता होगी क्योंकि अणुओं और व्यूहाणुओं की क्रिया-प्रतिक्रिया जीवन सृजन के लिए आवश्यक गति से केवल द्रवों में ही सम्भव हो सकती है। पृथ्वी पर विद्यमान समुद्रों का निर्माण जल से हुआ है लेकिन उद्जन युक्त अन्य प्रकार के द्रवों का भी अस्तित्व हो सकता है।

यदि किसी ग्रह पर अत्यन्त प्रचुर परिमाण में द्रव-पदार्थ मौजूद हुए तो वहां वायुमण्डल का अस्तित्व भी निश्चित है। इस प्रकार हमें एक ऐसी दुनिया चाहिए जिसमें वायुमण्डल हो और समुद्र हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चन्द्रमा पर, जहाँ वायुमण्डल और समुद्र का अभाव है, जीवन का पूर्ण अभाव है। हम चन्द्रमा के धरातल पर पहुंच चुके हैं और यह बात सिद्ध हो चुकी है। इसी कारण बुध ग्रह में भी जीवन का अस्तित्व सम्भव नहीं।

शुक्र ग्रह का वायुमण्डल बहुत सघन है जिसमें कारबन डाइआक्साइड की बहुलता है। इसका तापमान बहुत अधिक है तथा यह बिल्कुल शुष्क है। अतएव, किसी को भी शुक्र ग्रह पर जीवन के प्रादुर्भाव और विकास की आशा नहीं। मंगल ग्रह का वायुमण्डल बहुत ही विरल है जिसमें कारबन डाइआक्साइड विद्यमान है। लेकिन, इसकी धरती पर तथा हिममण्डित ध्रुवों पर द्रव पदार्थ जमे हुए रूप में मौजूद है। यद्यपि यहां पर भी जीवन के अस्तित्व की सम्भावना नहीं है फिर भी इस बात के कुछ संकेत मिलते हैं कि मंगल ग्रह का तापमान कभी कभी बढ़ता है और ऐसे समय उसके धरातल पर झीलों, नदियों तथा अधिक सघन वायुमण्डल का अस्तित्व हो सकता है।

दो मानवरहित अन्तरिक्षयान, वाइकिंग-१ और वाइकिंग-२, जो धीमी रफ्तार से मंगल ग्रह के धरातल पर उतरने वाले हैं, धरातल पर उतरने के बाद कुछ ऐसे स्वचालित प्रयोग करेंगे जिनसे यह पता लगाया जा सकेगा कि क्या उनके आस-पास की धरती में कोई ऐसी रासायनिक प्रक्रिया सक्रिय है जिसको जीवित सूक्ष्म कोषों द्वारा जनित रासायनिक प्रक्रिया की संज्ञा दी जा सकती है।

मंगल के आगे विशालकाय बृहस्पति ग्रह है। इसके विशाल वायुमण्डल में अधिक अंश उदजन का है परन्तु कुछ अंश मेथोन, जल और एमोनिया का भी विद्यमान है। इस प्रकार के वायुमण्डल में जीवन का निर्माण करने वाले व्यूहाणुओं का प्रादुर्भाव सम्भव है।

अभी हाल तक, हमें इस बारे में कुछ भी पता न था कि बृहस्पति ग्रह के वायुमण्डल के नीचे क्या है? लेकिन, इस ग्रह के अध्ययन हेतु प्रक्षिप्त पायोनियर-१० और पायोनियर-११ अन्तरिक्षयानों ने बृहस्पति ग्रह का निकट से निरीक्षण करने के उपरान्त जो सूचनाएं भेजी हैं उनसे पता चलता है कि बृहस्पति द्रव उदजन की एक विशाल गेंद है और जैसे-जैसे वायुमण्डल में नीचे उतरते जाते हैं, वैसे-वैसे ग्रह का तापमान बढ़ता जाता है। बादलों की जो परतें हमें दिखायी पड़ती हैं उनका तापमान १३५ डिग्री सेण्टीग्रेड है। लेकिन ६,००० मील नीचे विद्यमान बादलों की परत का तापमान ३,६०० डिग्री सेण्टीग्रेड से भी अधिक है। इन दोनों के बीच, कोई ऐसा स्थान होना चाहिए जहाँ का तापमान सह्य हो।

बृहस्पति ग्रह की इस विशालकाय उदजन-गेंद में अनवरत हलचल रहती है। इसमें उदजन की विशाल लहरें कहीं ऊपर को तो कहीं नीचे को धीमी गति से प्रवहमान हैं। कभी-कभी इसमें प्रचण्ड हरीकेन जैसे तूफान भी उठते हैं। बृहस्पति ग्रह में जो विशाल लाल धब्बा दृष्टिगोचर होता है वह इसी प्रकार के एक ऐसे प्रचण्ड हरीकेन की आँख है जो कई हजार वर्षों से सक्रिय है।

यदि बृहस्पति ग्रह के उस भाग में, जहाँ का तापमान सह्य है, जीवन किसी भी रूप में विद्यमान है तो वह उदजन किसी ऐसी उर्ध्वमुखी लहर में ही सम्भव हो सकता है। लेकिन, इस स्थिति में तापमान इतना अधिक घट जायेगा कि उसमें सक्रिय जीवन का अस्तित्व सम्भव नहीं हो सकता। इसी प्रकार अधोगामी उदजन लहर में विद्यमान जीवन को इतने प्रचण्ड तापमान का सामना करना पड़ेगा कि वह अधिक समय तक टिक नहीं सकता। इसका अभिप्राय यह होगा कि यदि वहाँ कोई जीवन है तो वह बहुत ऊपर या बहुत नीचे न जाकर कहीं मध्य में विद्यमान होगा। तब सहज ही यह प्रश्न भी उठता है कि कोई प्रलयंकर तूफान उठने की स्थिति में इस प्रकार के जीव किस प्रकार अपने अस्तित्व की रक्षा करेंगे?

हम इस बारे में कुछ भी नहीं जानते और सम्भवतः उस समय तक जान भी नहीं सकते जब तक हमारे अनुसन्धानात्मक अन्तरिक्षयान बादलों की निचली परत को भेद कर उस स्थान तक नहीं पहुंचते जहाँ का तापमान मातवर है।

और, यदि बृहस्पति ग्रह पर जीवन का अस्तित्व नहीं तो यह सम्भव है कि शनि, यूरेनस या नेपच्यून ग्रह पर किसी प्रकार का जीवन हो। इन ग्रहों का वायुमण्डल अपेक्षाकृत अधिक शांत है।

विशालकाय ग्रहों में जीवन का उद्‌भव सम्भवतः सागरों के गर्भ में ही होगा और यह जीवन इस रूप में होगा कि द्रव-पदार्थों में आसानी से हलचल कर सके। लेकिन, प्रबुद्ध होने पर भी यह जीव हाथों और पैरों का उपयोग उस प्रकार कर सकेंगे जैसा कि पृथ्वी पर रहने वाले मानव करते हैं।

अतएव, समुद्रों के साथ-साथ सूखी भूमि की भी जरूरत पड़ेगी जबकि बृहस्पति ग्रह तथा अन्य विशालकाय ग्रहों पर इसका पूर्ण अभाव है।

अब इन विशालकाय ग्रहों के उपग्रहों को लीजिए। इनकी कुल संख्या २९ है तथा इनमें से कुछ का आकार मंगल जितना है। इन २९ उपग्रहों में से, २८ में न कोई वायुमण्डल है और न कोई समुद्र है। अतएव, चन्द्रमा के समान इनमें भी जीवन की सम्भावना नहीं।

शनि ग्रह के १० उपग्रहों में सबसे बड़ा 'टीटान' है। हमारे सौर मण्डल में विद्यमान सभी उपग्रहों में इसका व्यास सबसे अधिक है। इसका अपना वायुमण्डल भी है जो मंगल के वायुमण्डल से अधिक सघन है।

'टीटान' के वायुमण्डल में मेथान गैस विद्यमान है और इस बात की पूरी सम्भावना है कि 'टीटान' में विद्यमान परिस्थितियों के अन्तर्गत, मेथान के सूक्ष्म व्यूहाणु बड़े आकार के व्यूहाणुओं से सम्बद्ध हो सकते हैं। दूरबीन से देखने पर 'टीटान' का रंग नारंगी दिखाई पड़ता है। यह रंग टीटान के वायुमण्डल में बड़े आकार के व्यूहाणुओं के विद्यमान होने के कारण हो सकता है। यह व्यूहाणु पेट्रोलियम जैसे पदार्थ के हो सकते हैं।

(शेष पृष्ठ २६पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नारी जगत्

कर्त्तव्य माँ का बालकों के प्रति

—शीला

अपने बालक तो सभी को प्यारे होते हैं फिर चाहे वह धनी हो या निर्धन। माँ की प्यार भरी गोद में बालक को जो सुख-मोद प्राप्त होता है वह अन्यत्र कहीं नहीं। माता भी बालक को गोद में बैठाकर स्वर्गोपम सुख पाती है। किन्तु अत्यधिक प्यार, लाड़ और दुलार अथवा बालकों को कठोर अनुशासन में रखने का जो परिणाम सामने आता है वह भी अच्छा नहीं। बालक का भविष्य बचपन के सही या गलत परिणामों से ही बनता और बिगड़ता है।

प्राय: यह जाता है कि बालक ने यदि तनिक सी शरारत की तो कई माताएँ बालकों को डराने धमकाने पर उतर आती हैं। कठोर अनुशासन के नियम उन पर थोपने के प्रयास करती हैं। किन्तु यह कठोरता बालक को बनाती नहीं बिगाड़ती ही है। बालक पर अत्यधिक कठोर नजर रखने का परिणाम कई बार इस रूप में भी सामने आता है कि बच्चा कोई भी कार्य करने से कतराता है घबराता है और कई बार तो भाग भी जाता है। इस प्रकार के आचरण से माता अपने बालक में आत्म-विश्वास को जगाती नहीं अपितु गिराती है और अनजाने में ही उसके मस्तिष्क का विकास न होने देने के लिए उत्तरदायी बन जाती है।

ऐसे कठोर नियन्त्रण में पले बालक तनिक-सी भी स्वतंत्रता मिलते ही कई बार तो अपने घर से ही भाग निकलते हैं। ऐसे बालक जब घर से चले जाने के बाद भूख का शिकार बनते हैं तो कई असामाजिक गिरोहों के हत्थे चढ़ जाते हैं। उन्हें जेबकतरों के अड्डों में सहारा मिलता है या ऐसे ही अन्य धंधेबाजों के डेरों में वे अपने आशियाने बना लेते हैं। फिर तो वे अपराधों की उसी दुनिया में रम जाते हैं। यदाकदा यदि उनमें इस कुम्भी-पाक से निकलने की भावनाएं भी उभरती हैं तो भी वे उससे उबर नहीं पाते और सारा जीवन अपराधों के उसी संसार में स्वाहा करने पर वे बेचारे किस्मत के मारे बाध्य हो जाते हैं।

ये बालिकाएं बेचारी : किस्मत की मारी

अत्यधिक दबाव या दुलार के भार से दबी हुई कन्याएं भी वय: संधि के आते ही गलत पथ पर पड़ जाती हैं। ऐसी बालिकाएं जिन्हें बाल्यवस्था में अत्यधिक [illegible]कुशों में रहना पड़ता है या जिन्हें कोई अंकुश सहना ही नहीं पड़ता इस आयु में अनायास ही गुंडों के चंगुल में जा फंसती हैं और अन्ततोगत्वा ऐसे तत्त्वों के संसर्ग संपर्क से उनका जीवन दु:खमय हो जाता है। अनेक स्थितियों में तो वे इन तत्त्वों के नियन्त्रण में आकर अपने कुकृत्यों से सारे समाज को ही क्षीण एवं दूषित बनाने में रत हो जाती हैं।

बाल मन पर प्रभाव

वस्तुत: बालकों के व्यक्तित्व के विकास पर उनके माता पिता या अभिभावकों के रहन-सहन और व्यवहार का प्रभाव ही सर्वाधिक पड़ता है। माता-पिता विशेष परिश्रम द्वारा अपने बालक के भावी जीवन को सुखद दिशा प्रदान कर सकते हैं तो योग्य मार्गदर्शन न देने पर उनके विकास को अवरुद्ध करने में भी सहायक बनते हैं। वस्तुत: कैसी भी स्थिति क्यों न हो माँ को अपने बालक में उच्च विचारों एवं श्रेष्ठ भावनाओं का संचार करने के लिए प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील रहना चाहिए। माता के लिए पिता की तुलना में भी यह कहीं अधिक आवश्यक है कि वह अपने शिशु को भूत-प्रेतों, चोर-डाकुओं की कहानियां न सुनाएँ अपितु अपने आदर्श महापुरुषों की अनुकरणीय जीवन गाथाओं से उनमें वीरता एवं दया-लुता के भाव जगाएं। बालक के कोमल मन पर जैसे सस्कार पड़ेंगे, उसका भावी जीवन उन्हीं के अनुसार दिशा ग्रहण करेगा।

मंद बुद्धि बालकों की अवहेलना का सिलसिला भी माता पिता को न अपनाना चाहिए अपितु ऐसे बालकों को सहानुभूति व स्नेह का प्रदर्शन कर सही मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। बाल्यकाल के अनेक मंद-बुद्धि बालक ही बड़े होकर अत्यन्त मेधावी सिद्ध हुए हैं।

अत्यधिक प्यार : बालक से अत्याचार

अनेक बार आप ऐसे परिवारों में भी गई होंगी जहाँ घर में आए अतिथि की उपस्थिति में भी बालक स्वेच्छाचार, जिद्द एवं हठ का प्रदर्शन करने से नहीं चूकते। अनेक बालक तो ऐसे अवसर पर ही अपने माता पिता से जेबखर्च देने की हठ पकड़ बैठते हैं और यदि उन्हें लगे कि टालमटोल की स्थिति है तो अकड़ भी बैठते है? वस्तुत: यह स्थिति उन बालकों को अपने माता-पिता से मिले अत्यधिक लाड़ चाव का ही सुस्पष्ट प्रभाव है। उनकी यही हठ व जिद्द उनके भावी जीवन में ऐसी बाधा का सृजन करती है कि उनके विकास का क्रम मन्द हो जाता है।

विकास की नींव

प्रत्येक अभिभावक और विशेषत: महिलाओं को इस तथ्य को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि बाल जीवन का प्रारम्भ ही व्यक्तित्व के विकास की आधारशिला है। प्राय: पांच से १६ वर्ष के मध्य की आयु ही व्यक्तित्व के मौलिक विकास की सही अवधि है। इस अवधि में बालक के भविष्य का निर्माण करने में उसके घर का वातावरण

(शेष पृष्ठ १२ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तम्बाकू छोड़िए

इस में २४ घातक विष हैं

मुख्य विष हैं—

१. निकोटिन विष—से कैंसर पैदा होता है।

२. कार्बन मोनोक्साइड विष—से दिल की बीमारी सांस रोग, दमा और आँखों की रोशनी धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

३. मार्श गैस विष—से शक्ति नष्ट होकर नपुंसकता प्राप्त होती है।

४. अमोनिया विष—से पाचन शक्ति और जिगर बिगड़ जाते हैं।

५. कोलीडीन विष—से सिर चकराने लगता है, नसें ढीली पड़ जाती हैं।

६. पीरीडियन विष—से आँतों में खुश्की और पेट में कब्ज रहने लगता है।

७. कार्बोलिक एसिड विष—से अनिद्रा, स्मरण शक्ति का ह्रास और चिड़चिड़ेपन का स्वभाव बनता है।

८. परफैरोल विष—से दाँत पीले, मैले और कमजोर हो जाते है।

९. एजालिन विष और सायनोजन विष—से खून खराब हो जाता है।

१० फुरफुरल विष और प्रूसिड विष—से थकान, जड़ता और उदासी पैदा होती है।

तम्बाकू में पाए जाने वाले अन्य विषों के कारण खांसी, टी० बी०, अन्दरूनी सूजन, लकवा तथा खून का पानी तक बन जाता है।

तम्बाकू एक जहर

विश्व स्वास्थ्य संघ (W.H.O.) का मत

१८ मई १९७० को सिगरेट व तम्बाकू के खिलाफ सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया जिसके कुछ अंश देखिये—

"२४वीं वर्ड हैल्थ एसेम्बली को अपने डाइरेक्टर-जनरल की रिपोर्ट देखकर इस बात का निश्चय हो गया है कि धूम्रपान के विनाशकारी प्रभावों से फेफड़े और दिल की बीमारियाँ हो जाती है जिनमें कैंसर, दमा, ब्रांकाइटिस और अन्य दिल के रोग शामिल हैं।"

आगे इस प्रस्ताव में अपने सदस्यों को सिगरेट न पीने की हिदायत की गई है और डाइरेक्टर-जनरल से, अनेक उपाय सिगरेट विरोधी प्रचार के लिए करने का अनुरोध किया गया है।

डायरेक्टर जनरल के आदेश

१. स्वास्थ्य सेवा में काम करने वालों को खुद सिगरेट छोड़कर मिसाल कायम करनी चाहिए और अपने रोगियों व उनके परिवारों से धूम्रपान छुड़वाना चाहिए।

२. बच्चों व किशोरों को सिगरेट पीना शुरू करने से ही रोकना चाहिए।

३. जहाँ भी सम्भव हो सिगरेट पीने के कुपरिणामों का प्रचार करना चाहिये। सम्भव हो तो चित्र आदि भी दिखाने चाहिये।

४. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य रक्षा के समस्त आयोजनों में धूम्रपान बन्द करवाना चाहिये।

५. कम से कम रेलों, बसों, व सार्वजनिक स्थानों में धूम्रपान बन्द करना चाहिए।

६. तम्बाकू का स्वास्थ्य पर जो विनाशकारी प्रभाव है उनका अधिक से अधिक प्रचार करना चाहिए।

भारत के डाक्टरों का मत

आल इन्डिया मैडिकल कानफ्रेंस ने १९६९ व ७० में अपने ४५ वें और ४६ वें दोनों वार्षिक अधिवेशनों में सर्व-सम्मत प्रस्ताव पास किया जिसमें धूम्रपान को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक और खतरनाक रोगों को पैदा करने वाला बताते हुए भारत सरकार से अनुरोध किया कि हर सिगरेट के पैकेट पर कानून बनाकर अमरीका, इटली, इग्लैंड, स्वीडन आदि की तरह यह लिखा जाना अनिवार्य कर दे कि—

धूम्रपान आपके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है ! ! !

(शेष पृष्ठ २१ का)

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि उसके अभिभावकों में कलह का समावेश हो तो बाल मन भी उस वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। ऐसे परिवारों में बालकों की अपने अभिभावकों पर से आस्था ही विलुप्त हो जाती है। उस घुटन भरे वातावरण में जहाँ माता पिता गलत साधनों से धन जुटाते हैं, बालकों के मन पर भी वैसे ही संस्कार जम जाते हैं। यदि माता-पिता मदिरापान आदि व्यसन के शिकार हों तो उनकी संतान भी इस प्रकार की लतों की अभ्यस्त होने से प्रायः बच नहीं पाती।

माता का सर्वप्रधान कर्त्तव्य यह है कि वह अपने बालकों के व्यक्तित्व को स्वतंत्र रूप से विकसित होने दे। यदि बालक किसी प्रकार की गलती करता है तो यह समझने का प्रयास किया जाना चाहिए कि उसने ऐसा क्यों किया ? बालकों पर एक सीमा तक ही नियन्त्रण उचित होगा। माता पिता यदि अपने बालकों के गुण अवगुण को प्यार से समझने का प्रयास करें तो बालक में उनके प्रति आदर एवं स्नेह की भावना बनी रहती है। अनावश्यक नियन्त्रण व अंकुश अन्ततोगत्वा बालक के विकास का नहीं, विनाश का ही कारण बनते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वास्थ्य जगत —बी० एस० बेदी

मोटापा : अभिशाप

शरीर के सभी अंगों में जब चर्बी चढ़ जाती है तो मनुष्य मोटा हो जाता है। थोड़े से परिश्रम से थक जाता है। पद-यात्रा में उसका साँस फूल जाता है।

मोटापे के कारण

चर्बी बढ़ाने वाले पदार्थों का अधिक प्रयोग करना, परिश्रम कम करना, अधिक सोते रहना, खाना खाने के बाद जल्दी निद्रा लेना।

सरल और यौगिक इलाज

रोगी को पहले दो दिन का उपवास करना चाहिये। उपवास के दो दिन, दिन में तीन बार नींबू मिला पानी पीना चाहिए। दिन में तीन या चार बार संतरे का रस या फलों का उपयोग करना चाहिए। प्रातः उठते ही लगातार चार दिन एनिमा से पेट साफ करना चाहिए।

ऐसा करने से आंतों की गन्दगी और कई प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं। उपवास के बाद हरी साग-सब्जियों और फलों का प्रयोग अधिक करना चाहिए तथा भुनी हुई चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। नमकीन दलिया, मोटे आटे की रोटी, टमाटर और रसदार फल लेना लाभदायक है। मक्खन निकली लस्सी भी लाभदायक है। दही का मट्ठा बनाकर जीरा, काली किर्च, काला नमक भी डाल सकते हैं, यह पेट के बहुत से रोगों को नष्ट करता है। मिठाई और गरिष्ठ पदार्थों का त्याग करना चाहिए। प्रातः दो-तीन मील का भ्रमण करना बहुत ही लाभदायक है। रात का खाना जल्दी खाना चाहिए और खाने के बाद एक मील या आधा मील भ्रमण करना चाहिए। खाना खाने के तीन घन्टा बाद सोना चाहिए। उबलते दूध में दो-तीन दाना मूनक्का या अंजीर डालकर पी सकते हैं। ऐसा करने से शरीर सुन्दर और कान्तिमय बन जाएगा।

कुलथों को पकाकर खाने से शरीर का मोटापा दूर होता है। थोड़ा सा त्रिफला रात को मिट्टी के बर्तन में भिगोकर प्रातः मल, छान कर थोड़ा-सा शहद डालकर पीने से मोटापा कम होता है। मोटापा में धनुरासन, चक्र आसन, ताड़ासन, त्रिकोणासन, हल आसन लाभदायक हैं। जिनका दिल बहुत कमजोर हो या रक्तचाप हो और औरतों का मासिक धर्म और प्रसूति के दिनों में और गर्भावस्था के दिनों में कोई आसन नहीं करने चाहिए। त्रिकोण आसन भूमि पर खड़े होकर दोनों पैरों को खूब फैलावें। उसके बाद झुककर हाथों की अंगुलियों को पावों की अंगुलियों से छू लें। दूसरे हाथको आप सिर के ऊपर से झुकने वाली दशा में रखें आप को सामने की ओर देखना चाहिए। इस प्रकार आप दूसरी ओर भी कर [illegible] हैं। इस आसन को आप प्रातः शौच आदि से [illegible] होकर प्रति दिन पांच मिनिट करें। मोटापे में बहुत [illegible] गा।

नया वैदिक साहित्य

१. धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम

लेखक—श्री पं० शिवकुमार शास्त्री, काव्य-व्याकरण तीर्थ, संसद् सदस्य। मूल्य १)५०

पं० शिवकुमार जी शास्त्री आर्यसमाज के पुराने महोपदेशक रहे हैं। पिछले ३० वर्षों के अपने अनुभवों को उन्होंने "धरती का स्वर्ग" नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

गृहस्थाश्रम को कैसे स्वर्ग बनाया जाए ? इस विषय में शास्त्री जी का मार्गदर्शन सभी के जीवन को नयी प्रेरणा देने में समर्थ है।

पुस्तक का मूल्य लागत मात्र १)५० है।

२. वैदिक गृहस्थाश्रम

पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड की महान् कृति : विवाह पर भेंट के लिए। कपड़े का जिल्द मूल्य ६)

३. धर्म का सार

स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय लिखित यह पुस्तक प्रचार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। साधारण व्यक्तियों को समझाने के लिए इसे ६ कथाओं में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य १), किन्तु १०० मंगाने पर ६५) सैकड़ा

४. महान् दयानन्द मूल्य १)५० १००) सैकड़ा

महर्षि दयानन्द को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हुए पं० शिवदयालु जी ने इस अनमोल पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

५. आदर्श परिवार मूल्य ६० पसे। ४०) सैकड़ा

राजस्थान के भूतपूर्व मंत्री श्री युगलकिशोर द्वारा लिखित यह पुस्तक प्रचार व विवाह आदि पर बांटने के लिए विशेष उपहार है।

६. प्रभु के चरणों में मूल्य १.५०।

प्रसिद्ध विद्वान् पं० हरिशरण जी द्वारा सामवेद के कुछ मंत्रों की सरल व्याख्या प्रार्थना रूप में प्रस्तुत की गयी है। मंत्रों को पढ़ते हुए साधक भाव विभोर हो जाता है।

७. वन्दना के स्वर मूल्य ८)

संपादक—श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

डिलक्स संस्करण १५)

अधिक से अधिक मंगाएं : बांटें

जन-ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली-५

[illegible] साप्ताहिक, १६ मई १९७९ Dr. Vinod [illegible]

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐतिहासिक कहानी

—सत्येन्द्र

सत्कार एवं सजा

आदिलशाह के सेनापति अफजल खाँ की १० नवम्बर १६५९ की मध्याह्न में हुई हत्या के उपरांत उसी दिन छत्रपति शिवाजी ने ससैन्य प्रतापगढ़ दुर्ग से प्रस्थान कर २१ दिवसीय विजय अभियान का श्रीगणेश किया था। इस अभियान के अन्तर्गत १८ दुर्गों को हस्तगत कर सरजा शिवाजी ने स्वराज्य का अंग बना लिया।

क्रुद्ध आदिलशाह ने छत्रपति के मान-मर्दन हेतु हब्शी सेनापति सिद्दी जौहर के नेतृत्व में २० हजार की विशाल वाहिनी भेजी। किन्तु रणशूर शिवा १३ जुलाई, १६६० को इस दुर्ग से भी सकुशल निकलकर राजगढ़ में अपनी पूज्या माता जीजाबाई के दर्शनार्थ जा पहुंचे।

यहां एक विशाल स्वागत समारोह का आयोजन हुआ और कान्हो जी जेधे आदि विश्वस्त मराठा वीरों का भव्य सम्मान किया गया।

× ×

जिस समय महाराष्ट्र की तरुणाई स्वराज्य की स्थापनार्थ छत्रपति शिवाजी के नेतृत्व में क्रियाशील थी, उन्हीं दिनों कतिपय देशद्रोही भी थे जिन्होंने अफजल खाँ का साथ दिया था। अफजल खाँ की मृत्यु के उपरांत उसके पुत्र फाजल खाँ आदि पलायन करते समय जंगलों में भटक रहे थे तो ऐसा ही एक देशद्रोही खण्डोजी खोपड़े उनका मार्गदर्शक बना था। यह देशद्रोही अभी भी जीवित था और अपने प्राण बचाने हेतु यत्र-तत्र भटक रहा था।

छत्रपति शिवाजी के राजगढ़ आगमन के समाचार में उसे अपनी मृत्यु के सन्निकट आने का आभास हुआ। पाप का भार ढोते हुए भी यह देशद्रोही जीवित रहने का इच्छुक था। एक दिन उसने अपने एक विश्वस्त व्यक्ति को अपने जामाता श्री हैबतराव की सेवा में भेजा। हैबतराव शिवाजी के विश्वासपात्र सरदार थे और अपने श्वसुर की काली करतूतों की भी उन्हें भलीभांति जानकारी थी।

जब अपने श्वसुर की ओर से प्राण रक्षार्थ सहायता की याचना उन्हें प्राप्त हुई तो वह असमंजस ग्रस्त हो उठे। किन्तु इसी बीच खण्डोजी स्वतः अपनी पुत्री एवं ज माता के घर पर पहुंच गया और उसने हैबतराव से कहा कि "वह महाराज शिवाजी की शरण में जाकर अपने पापों के लिए क्षमा याचना करने का इच्छुक है।"

हैबतराव उसकी इस इच्छा को सुनकर असमंजस ग्रस्त हो गए। उनके समक्ष धर्म संकट उपस्थित था, अतः वह मौन खड़े रहे। तत्काल ही इसी मानसिक अवस्था में उन्होंने प्रस्थान किया और वे जा पहुँचे प्रतापगढ़ के समीप स्थित कान्हो जी जेधे के निवास स्थान पर। उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने श्वसुर का समग्र वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया। किन्तु कान्हो सुनते ही गर्ज उठे "अब उसे कोई नहीं बचा सकता।"

हैबतराव ने उनसे पुनः अनुरोध किया कि "हे नाइक! महाराज शिवाजी आपका अनुरोध अस्वीकार नहीं करेंगे। एक बार आप उनसे कहकर खण्डोजी की प्राण रक्षा कर हमारे परिवार पर कृपा कीजिए।"

कान्होजी द्वारा वर्षों से की गई भोंसला कुल की सेवा के परिणामस्वरूप छत्रपति उन्हें पिता तुल्य आदर प्रदान करते थे और स्वराज्य का प्रथम सम्मान भी उन्हें ही प्राप्त हुआ था।

कान्होजी अधिक स्पष्टवादी नहीं थे अतः उनके लिए हैबतराव को अप्रसन्न करना भी कठिन था। अतएव उन्होंने छत्रपति शिवाजी से भेंट करने का निश्चय किया और राजगढ़ जा पहुंचे। आपने छत्रपति का अभिवादन किया और शिवाजी द्वारा प्रश्न किए जाने पर आपने कहा—"खण्डोजी खोपड़े शरण में आया है और अभयदान मांगता है महाराज! मैं भी चाहता हूं कि छत्रपति उसे अभयदान प्रदान करें।"

कान्होजी के मुख से ये शब्द सुनते ही शिवाजी क्रोध से दग्ध हो उठे और बोले "हमने उस नीच को जागीर देकर उसका सत्कार किया किन्तु वह अफजल खां से जा मिला। उसने हमसे वैर किया और आप उसे ही अभयदान देने का अनुरोध करते हैं। उचित तो यही होगा कि ऐसे देशद्रोही के शरीर के चार टुकड़े करके चारों दिशाओं में फेंक दिये जाएं।"

कान्होजी कुछ क्षण मूर्तिवत् खड़े रहे और फिर अत्यन्त नम्रतापूर्वक बोले "महाराज, खण्डोजी के अपराध को आप मेरा ही अपराध समझकर उसे प्राणदान दें।"

छत्रपति का क्रोध शांत हो गया था अतएव वह बोले "आप कहते हैं तो हमें और कुछ नहीं सूझता। हमें आपका अनुरोध स्वीकार है। आप खण्डोजी खोपड़े को हमारे पास ले आइए।"

× ×

खण्डोजी कान्हो जी के साथ दुर्ग में प्रविष्ट हुआ और उसने भी छत्रपति का अभिवादन किया। उसके नेत्र धरती में ही गड़े रहे। शिवाजी भी कुछ न बोले और दरबार समाप्त हो गया।

और फिर खण्डोजी प्रतिदिन राजदरबार में उपस्थित होने लगा।

एक दिन छत्रपति का मुख क्रोध से लाल था। वे

(शेष पृष्ठ १६ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी डायरी के दो पन्ने

—एक दिन जीवन के शब्द कोष को बड़े प्रयत्न से सामने रख—अन्तरावलोकन शुरू किया।

—इसलिए कि जिस-जिस पर 'असफलता' लिखा हो उस प्रत्येक पन्ने को फाड़ कर फेंक दूं।

—बड़ी जल्दी ही 'असफलता' का पृष्ठ मिला, किन्तु नीचे की ओर लिखा था 'सफलता'।

—कैसे फाड़ता ?—आगे पृष्ठ पलटना शुरू किया—

—दूसरा मिला जहां नीचे सुवाच्य अक्षरों में 'असफलता लिखा था, किन्तु ऊपर कोने में 'सफलता'।

—इसे भी न फाड़ सका—सोचा खैर आगे देखेंगे।

—जल्दी ही एक पृष्ठ मिला जिस पर सिर्फ़ 'असफलता' था।

—ज्योंही फाड़ने को हुआ पीछे लिखा था 'सफलता'।

—बहुत खोजा किन्तु ऐसा एक भी पृष्ठ न मिला जिस पर असफलता के साथ 'सफलता' न जुड़ा हो।

—किन्तु इस दौरान हल्के काले रंग के कुछ पन्ने मिले जिन पर गहरे काले रंग में लिखा था। 'निराशा'।

—आगे-पीछे ऊपर-नीचे कहीं कोई अन्य शब्द न था।

—कहीं कोई चिन्ह न था—बस 'निराशा'।

—मैं चुन-चुन कर इन्हीं पन्नों को फाड़ रहा हूं।

—अब अपने शब्द कोष में 'निराशा' वाला कोई पन्ना नहीं रहने दूंगा।

—मुझे 'असफलता' की कोई फिक्र नहीं।

—उस दिन संध्या हमेशा की तरह अंधेरे की चादर बिखेरने लगी।

—दृश्य बड़ा अजीब था—मैंने देखा—

—दीपक के तेल ने बड़े आत्माभिमान से बाती से कहा—

—मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं, मैं अकेले ही जल लूंगा।

—प्रकाश फैलेगा—दीपक जलेगा—'मुझ अकेले से।'

—जलने का यत्न किया, मगर हाय··· ।

—सभी नितांत निष्फल, निरर्थक।

—तब इतरानी इठलाती सी बाती बोली—

—देखो—मैं अकेली ही जलती हूँ—

—संसृति का सारा तिमिर अकेले ही हर लूंगी।

—जली मगर बेकार।

—हल्का-सा धुंआ गहरे अंधेरे में क्षणमात्र में खो गया।

—तब तेल और बाती ने परस्पर बड़ी बेबसी भरी कुछ माँगने की सी, कुछ देने की-सी इच्छा भरी निगाह से देखा।

—और वे एक दूसरे के अन्तर में समा गए।

—बस—काला अंधेरा हार गया—

—रंगीन प्रकाश जीत गया।

—लगा हमारे-तुम्हारे जीवन में भी—

—कहीं 'विचार' रूपी तेल जलने में असफल पड़ा है।

—कहीं-भावना रूपी बाती अकेली निष्प्रयोजन हो चुकी है।

—विचारों का तेल अकेले कुछ कहीं कर सकता और भावना की बाती भी।

—जो विचारते हैं—वे करते नहीं।

—जो किए जा रहे हैं—उनके पास विचार नहीं।

—आओ—अगर 'सत्य' का आलोक फैलाना है।

—अगर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सार्थक करना है।

—तो जीवन रूपी दीपक में—विचारों के तेल और भावना की बाती को मिलाकर अग्नि प्रज्वलित करें।

—दीप से दीप जल उठेंगे।

हापुड़ आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

हापुड़ आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ८ से ११ अप्रैल तक समारोह मनाया गया। इस अवसर पर आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में हुई सत्यार्थ-प्रकाश की परीक्षाओं के प्रमाणपत्र वदोवृद्र आर्य नेता मुंशी न्यादर सिंह द्वारा वितरित किये गए। समाज के प्रध्यापक प्रो० प्रेम स्वरूप ने परीक्षाओं के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि आगामी सितम्बर मास में वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर होने वाली परीक्षाओं में अधिकाधिक परीक्षार्थियों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए।

२५०) सैंकड़ा का
सत्यार्थ प्रकाश बांटें

अंग्रेजी का मोह त्यागें

हरयाणा दिल्ली उद्योग व्यापार मण्डल द्वारा आयोजित एक समारोह में भाषण करते हुए हरियागा के मुख्यमंत्री श्री बनारसी दास गुप्त ने सुझाव दिया कि हिन्दी जानने वाले हिन्दी में ही कार्य करें तथा अंग्रेजी का मोह त्याग दें। इसके साथ ही जहां हर कार्य हिन्दी में हो वहां स्वागत भाषण भी हिन्दी में ही पढ़ा जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्थान के नए प्रकाशन

१ आर्याभिविनय
काव्यमय व्याख्या सजिल्द २.५०
अजिल्द १.५०।

♦

२. वैदिक गृहस्थाश्रम : सजिल्द
पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड
मूल्य ६ रु०

♦

३. वैदिक गीता (पद्यानुवाद)
मूल्य १ रु०

♦

४. दयानन्द चित्रदर्शन
मूल्य २० रु०
किन्तु प्रचार के लिए
अभी मूल्य १५ रु०

♦

५. संस्कार विधिः
राज संस्करण बड़ा साइज, कपड़ की जिल्द
मूल्य ६ रु०
सादी जिल्द, मूल्य ५रु०

♦

शीघ्र मंगाइए
दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-११०००५

क्या आप ३०१) भेजकर आजीवन सदस्य नहीं बन सकते ?

क्या आप के मन में कभी यह इच्छा नहीं जागती कि आपका भी अपना कोई बच्चा पत्र हो ?

भूलिए नहीं—शताब्दी वर्ष का उपहार जन-ज्ञान साप्ताहिक—आपके सहयोग की राह देख रहा है—कसे भी दें, पर ३०१) भेजकर हमें आगे बढ़ने में सहयोग दें। —संपादक

(शेष पृष्ठ २४ का)

गरज उठे "इस नीच को बन्दी बना लो तथा कारावास में डाल दो।"

सैनिकों ने छत्रपति की आज्ञा का पालन किया और खण्डोजी कारागार में डाल दिया गया। अब सब अगली आज्ञा की प्रतीक्षा में थे। तुरन्त एक दिन आज्ञा हुई "खण्डोजी का दायां हाथ और बायां पैर काट दिया जाए।" दण्ड की घोषणा सुनते ही खण्डोजी के चीत्कार से दुर्ग गूंज उठा। शान्त शिवाजी रौद्र रूप धारण किये हुए थे।

खण्डोजी का हाथ व पैर काट दिया गया। कान्होजी का भी इस दंड का पता लगा। उन्होंने इसे अपना अपमान समझकर शिवाजी से पूछा "छत्रपति ! कैसा है आपका न्याय ? आपने अभयदान देकर भी खण्डोजी को दण्डित किया है महाराज।"

शिवाजी अत्यन्त भदुभाषा में बोले "आपका सम्मान करते हुए ही हमने खण्डोजी को मृत्यु दण्ड नहीं दिया। उसका वही हाथ काटा गया है जिससे उसने तलवार पकड़ी थी और वही पैर काटा गया है, जो अफजल खान की ओर चला था।

और फिर शिवाजी पुनः आवेशपूर्ण मुद्रा में गर्ज उठे "यदि हमें आपका ध्यान न होता तो इस देशद्रोही के शरीर के टुकड़े करके चारों दिशाओं में फेंक दिए जाते। स्वराज्य में कपटी, छली तथा देशद्रोही व्यक्तियों को प्राण दान नहीं दिया जाता अन्यथा कही जनता में यह भावना बलवती न हो जाए कि स्वराज्य में देशद्रोही भी सानन्द रहते हैं। स्वराज्य के सुसंचालन हेतु और इसकी रक्षार्थ अपराधी को उचित दण्ड दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि स्वराज्य में जिस भांति देशभक्तों का सत्कार उचित था उसी भाँति देशद्रोही को दण्ड दिया जाना था।

(पृष्ठ २० का शेष)

यह सम्भव है कि 'टीटान' उपग्रह पर पेट्रोलियम के विशाल समुद्र मौजूद हों तथा बीच-बीच में खुश्क भूमि भी हो। यह सम्भव है कि वहां समुद्री जीवन तथा खुश्क भूमि पर विकसित होने वाला जीवन मौजूद हो और इस बात की भी पूरी सम्भावना है कि खुश्क धरातल पर विकसित होने वाला जीवन प्रबुद्ध हो।

इसी बीच, पायोनियर-११ शनि ग्रह के निकट पहुँच रहा है तथा अगले कुछ वर्षों में हमें 'टीटान' के बारे में महत्त्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध हो सकेंगी। इससे प्राप्त सूचना के आधार पर ही 'टीटान' में जीवन की सम्भावनाओं के बारे में अन्तिम धारणा निर्धारित की जा सकेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थ प्रकाश में क्या लिखा है—३

कैसे पढ़ें ? क्या पढ़ें ?

* * *

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म्म, और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है ।

—सोने, चांदी, माणिक, मोती, मूंगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण करने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं हो सकता ।

—आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु भी सम्भव है ।

—आभूषणों के योग से बालकादिकों का मृत्यु दुष्टों के हाथ से होता है ।

—जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शीलस्वभावयुक्त, सत्यभाषणादि नियमपालनयुक्त और जो अभिमान, अपवित्रता से रहित अन्य की मलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारी जनों के दुःखों को दूर करने से सुभूषित, वेदविहित कर्मों से पराये उपकार करने में रहते हैं वे नर और नारी धन्य हैं ।

—आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की शाला में भेज देवें ।

—जो अध्यापक पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हों उनसे शिक्षा न दिलावें ।

—जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ने और शिक्षा देने योग्य हैं ।

—द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्यकुल अर्थात् अपनी-अपनी पाठशाला में भेज दें ।

—विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए ।

—लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए ।

—वहां अध्यापिका और अध्यापक, पुरुष वा भृत्य, अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें ।

—स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावें ।

—जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें तब तक स्त्री वा पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्त सेवन, भाषण, विषयकथा, परस्परक्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग, इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील, स्वभाव, शरीर और आत्मा से बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढ़ा सकें ।

—पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोस दूर ग्राम वा नगर रहें ।

—सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जायें चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हों, सबको तपस्वी होना चाहिए ।

—उनके माता पिता अपने सन्तानों से वा सन्तान अपने माता पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार पत्र, व्यवहार एक-दूसरे से कर सकें जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें ।

—जब भ्रमण करने को जायें तब उनके साथ अध्यापक रहें जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद कर सकें ।

—राजनियम और जातिनियम होना चाहिये कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़को और लड़कियों को घर में न रख सकें । पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजें वह दण्डनीय हो ।

—प्रथम लड़कों का यज्ञोपवीत घर में हो और दूसरा पाठशाला में आचार्य्यकुल में हों ।

—जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है ।

—जिसके संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'भुवः' है ।

—जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है ।

—जल से शरीर के बाहर के अवयव, सत्याचरण से मन, विद्या और तप अर्थात् सब प्रकार के कष्ट भी सह के धर्म ही के अनुष्ठान करने से जीवात्मा, ज्ञान अर्थात् पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के विवेक से बुद्धि दृढ़ निश्चय पवित्र होता है। इससे स्नान भोजन के पूर्व अवश्य करना ।

—जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता जाता है । जब तक मुक्ति न हो तब तक उसके आत्मा का ज्ञान बराबर बढ़ता जाता है ।

—जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होते हैं वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राणायाम की विधि:—जैसे अत्यन्त वेग से वमन होकर अन्न जल बाहर निकल जाता है वैसे प्राण को बल से बाहर फेंक के बाहर ही यथाशक्ति रोक देवे। जब बाहर निकालना चाहे तब मूलेन्द्रिय को ऊपर खींच के वायु को बाहर फेंक दे। जब तक मूलेन्द्रिय को ऊपर खींच रक्खे तब तक प्राण बाहर रहता है। इसी प्रकार प्राण बाहर अधिक ठहर सकता है। जब घबराहट हो तब धीरे-धीरे भीतर वायु को ले के फिर भी वैसे ही करता जाय, जितना सामर्थ्य और इच्छा हो। और मन में (ओ३म्) इसका जप करता जाय। इस प्रकार करने से आत्मा और मन को पवित्रता और स्थिरता होती है। जब प्राण भीतर से बाहर निकलने लगे तब उससे विरुद्ध उसको न निकलने देने के लिये बाहर से भीतर ले और जब बाहर से भीतर आने लगे तब भीतर से बाहर की ओर प्राण को धक्का देकर रोकता जाय।

—जङ्गल में अर्थात् एकान्त देश में जा, सावधान हो के, जल के समीप स्थित हो के नित्य कर्म को करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल चलन को करे, परन्तु यह जप मन से करना उत्तम है।

—सन्ध्या और अग्निहोत्र सायं प्रातः दो ही काल में करे। दो ही रात दिन की सन्धिवेला हैं, अन्य नहीं। न्यून से न्यून एक घण्टा ध्यान अवश्य करें। जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं वैसे ही सन्ध्योपासन भी किया करे। सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र करने का समय है।

—जैसे परमेश्वर ने सब प्राणियों के सुख के अर्थ इस सब जगत् के पदार्थ रचे हैं वैसे मनुष्यों को भी परोपकार करना चाहिये।

—दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

—जहां होम होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

—मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें।

—जितना घृत और सुगन्धादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है।

—प्रत्येक मनुष्य को सोलह-सोलह आहुति और छः-छः माशे घृतादि एक-एक आहुति का परिमाण न्यून से न्यून चाहिये, और जो इससे अधिक करे तो बहुत अच्छा है। जब तक इस होम का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय।

—आठवें वर्ष से आगे छत्तीसवें वर्ष पर्यन्त अर्थात् एक-एक वेद के साङ्गोपांग पढ़ने में बारह-बारह वर्ष मिल के छत्तीसवें आठ और मिल के चवालीस अथवा अठारह वर्षों का ब्रह्मचर्य और आठ पूर्व के मिल के छब्बीस वा नौ वर्ष तथा जब तक विद्या पूरी ग्रहण न कर लेवे तब तक ब्रह्मचर्य रक्खे।

—ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है—कनिष्ठ, मध्यम और उत्तम। उनमें से कनिष्ठ—जो पुरुष अन्नरसमय देह और पुरि अर्थात् देह में शयन करने वाला जीवात्मा, यज्ञ अर्थात् अतीव शुभगुणों से सङ्गत और सत्कर्त्तव्य है इसको अवश्य है कि २४ वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रिय अर्थात् ब्रह्मचारी रहकर वेदादि विद्या और सुशिक्षा का ग्रहण करे और विवाह करके भी लम्पटता न करे तो उसके शरीर में प्राण बलवान् होकर सब शुभ गुणों के वास कराने वाले होते हैं।

—मध्यम ब्रह्मचर्य यह है—जो मनुष्यो ४४ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर वेदाभ्यास करता है उसके प्राण, इन्द्रियां, अन्तःकरण और आत्मा बलयुक्त हो के सब दुष्टों को रुलाने और श्रेष्ठों का पालन करने हारे होते हैं॥

—उत्तम ब्रह्मचर्य ४८ वर्ष पर्यन्त का तीसरे प्रकार का होता है, जैसे ४८ अक्षर की जगती वैसे जो ४८ वर्ष पर्यन्त यथावत् ब्रह्मचर्य करता है, उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं का ग्रहण करते हैं।

—जो आचार्य और माता पिता अपने सन्तानों को प्रथम वय में विद्या और गुणग्रहण के लिये तपस्वी कर उसी का उपदेश करें और वे सन्तान आप ही आप अखण्डित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ पर्यन्त आयु को बढ़ावें वैसे तुम भी बढ़ाओ।

—जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नहीं करते वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

—२६ वर्ष के आदि में युवावस्था का आरम्भ होता है। पच्चीसवें वर्ष से लेके चालीसवें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की पुष्टि होती है। ४० वां वर्ष उत्तम समय विवाह का है अर्थात् उत्तमोत्तम तो अड़तालीसवें वर्ष में विवाह करना।

—जो विवाह करना ही न चाहें वे मरणपर्यन्त ब्रह्मचारी रह सकते हों तो भले ही रहें परन्तु यह काम पूर्ण विद्या वाले जितेन्द्रिय और निर्दोष योगी स्त्री और पुरुष का है। यह बड़ा कठिन काम है कि जो काम के वेग को थांभ के इन्द्रियों को अपने वश में रखना।

सत्याचार से सत्यविद्याओं को पढ़ें और पढ़ावें, तपस्वी अर्थात् धर्मानुष्ठान करते हुए वेदादि शास्त्रों को पढ़ें और पढ़ावें, बाह्य इन्द्रियों को बुरे आचरणों से रोक के पढ़ें और पढ़ाते जायें, मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटा के पढ़ते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पढ़ाते जायें, अग्नि और विद्युत् आदि को जान के पढ़ते पढ़ाते जायें और अग्निहोत्र करते हुए पठन और पाठन करें करावें, अतिथियों की सेवा करते हुए पढ़ें और पढ़ावें, मनुष्य सम्बन्धी व्यवहारों को यथायोग्य करते हुए पढ़ते पढ़ाते रहें, सन्तान और राज्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जायें, वीर्य की रक्षा और वृद्धि करते हुए पढ़ते पढ़ाते जायें, अपने सन्तान और शिष्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जायें।

—(अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य मानना, सत्य बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) अर्थात् मन वचन कर्म से त्याग, (ब्रह्मचर्य) अर्थात् उपस्थेन्द्रिय का संयम, (अपरिग्रह) अत्यन्त लोलुपता स्वत्वाभिमानरहित होना, इन पांच यमों का सेवन सदा करें।

—(शौच) स्नानादि से पवित्रता, (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि लाभ में हर्ष वा शोक न करना, (तप) अर्थात् कष्ट सेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान (स्वाध्याय) पढ़ना पढ़ाना, (ईश्वरप्रणिधान) ईश्वर की भक्तिविशेष से आत्मा को अर्पित रखना, ये पांच नियम कहाते हैं।

—यमों के विना केवल इन नियमों का सेवन न करें किन्तु इन दोनों का सेवन किया करें। यमों का सेवन छोड़ के केवल नियमों का सेवन करता है वह उन्नति को नहीं प्राप्त होता, किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है—

—अत्यन्त कामातुरता और निष्कामता किसी के लिये भी श्रेष्ठ नहीं, क्योंकि जो कामना न करे तो वेदों का ज्ञान और वेदविहित कर्मादि उत्तम कर्म किसी से न हो सकें।

—जैसे विद्वान् सारथि घोड़ों को नियम में रखता है वैसे मन और आत्मा को खोटे कामों में खैंचने वाले विषयों में विचरती हुई इन्द्रियों को निग्रह में प्रयत्न सब प्रकार से करे।

—जीवात्मा इन्द्रियों के वश होके निश्चित बड़े-बड़े दोषों को प्राप्त होता है और जब इन्द्रियों को अपने वश में करता है तभी सिद्धि को प्राप्त होता है।

—जो दुष्टाचारी अजितेन्द्रिय पुरुष है उसके वेद, त्याग, यज्ञ, नियम और तप तथा अन्य अच्छे काम कभी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते।

—जैसे श्वास प्रश्वास सदा लिये जाते हैं बन्द नहीं किये जाते वैसे नित्यकर्म प्रतिदिन करना चाहिये, न किसी दिन छोड़ना, जैसे झूठ बोलने में सदा पाप और सत्य बोलने में सदा पुण्य होता है वैसे ही बुरे कर्म करने में सदा अनध्याय और अच्छे कर्म करने में सदा स्वाध्याय ही होता है।

—जो सदा नम्र सुशील विद्वान् और वृद्धों की सेवा करता है, उसका आयु, विद्या कीर्ति और बल ये चार सदा बढ़ते हैं।

—विद्वान् और विद्यार्थियों को योग्य है कि वैर बुद्धि छोड़ के सब मनुष्यों को कल्याण के मार्ग का उपदेश करें और उपदेष्टा सदा मधुर सुशीलतायुक्त वाणी बोलें। जो धर्म की उन्नति चाहे वह सदा सत्य में चले और सत्य का ही उपदेश करे। जिस मनुष्य के वाणी और मन शुद्ध तथा सुरक्षित सदा रहते हैं, वही सब वेदान्त अर्थात् सब वेदों के सिद्धान्तरूप फल को प्राप्त होता है।

—वही ब्रह्मण समग्र वेद और परमेश्वर को जानता है जो प्रतिष्ठा से विष के तुल्य सदा डरता है और अपमान की इच्छा अमृत के समान किया करता है।

—द्विज ब्रह्मचारी कुमार और ब्रह्मचारिणी कन्या धीरे-धीरे वेदार्थ के ज्ञान रूप उत्तम तप को बढ़ाते चले जायें।

—जो वेद को न पढ़के अन्यत्र श्रम किया करता है वह अपने पुत्र पौत्र सहित शूद्रभाव को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है।

—जो वेद और वेदानुकूल स्मृतियों प्रतिपादित धर्म का आचरण करना इसलिये धर्माचार में सदा युक्त रहे। जो धर्माचरण से रहित है वह वेद प्रतिपादित धर्मजन्य सुखरूप फल को प्राप्त नहीं हो सकता और जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है।

—जो वेद और वेदानुकूल आप्त पुरुषों के किये शास्त्रों का अपमान करता है उस वेदनिन्दक नास्तिक को जाति, पङ्क्ति और देश से बाह्य कर देना चाहिए।

—जो पक्षपातरहित न्याय सत्य का ग्रहण असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार है उसी का नाम धर्म और इससे विपरीत जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहण रूप कर्म है उसी को अधर्म कहते हैं।

—जो पुरुष (अर्थ) सुवर्णादिकों रत्न और (काम) स्त्री-सेवनादि में नहीं फंसते हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान प्राप्त होता है, जो धर्म के ज्ञान की इच्छा करें, वेद द्वारा धर्म का निश्चय करें, क्योंकि धर्माऽधर्म का निश्चय विना वेद के ठीक-ठीक नहीं होता।

—जो ब्राह्मण हैं वे ही केवल विद्याभ्यास करें और क्षत्रियादि न करें तो विद्या, धर्म, राज्य और धनादि की वृद्धि कभी नहीं हो सकती। ब्राह्मण तो केवल पढ़ने पढ़ाने और क्षत्रियादि से जीविका को प्राप्त होके जीवन धारण कर सकते हैं जीविका के आधीन और क्षत्रियादि के आज्ञादाता और यथावत् परीक्षक दण्डदाता न होने से ब्राह्मणादि सब वर्ण पाखण्ड ही में फंस जाते हैं और जब क्षत्रियादि विद्वान् होते हैं तब ब्राह्मण भी अधिक विद्याभ्यास और धर्मपथ में चलते हैं और क्षत्रियादि विद्वानों के सामने पाखण्ड, झूठा व्यवहार भी नहीं कर सकते। जब क्षत्रियादि अविद्वान् होते हैं तो वे जैसा अपने मन में आता वैसा ही कराते हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिए ब्राह्मण अपना कल्याण चाहें तो क्षत्रियादि को वेदादि सत्यशास्त्र का अभ्यास अधिक प्रयत्न से करावें। क्षत्रियादि को नियम में चलाने वाले ब्राह्मण और संन्यासी तथा ब्राह्मण और संन्यासी को सुनियम में चलाने वाले क्षत्रियादि होते हैं।

परीक्षा पांच प्रकार की होती है—

—एक—जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो वह-वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है।

—दूसरी—जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह-वह सत्य और जो-जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है वह सब असत्य है। जैसे कोई कहे—"बिना माता पिता योग से लड़का उत्पन्न हुआ" ऐसा कथन सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से सर्वथा असत्य है।

—तीसरी—"आप्त" अर्थात् जो धार्मिक विद्वान्, सत्यवादी, निष्कपटियों का संग उपदेश के अनुकूल है वह-वह ग्राह्य और जो-जो विरुद्ध वह-वह अग्राह्य है।

—चौथी—अपने आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख वा सुख दूंगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

—और पांचवीं—आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव।

—जिसमें (इच्छा) राग, (द्वेष) वैर, (प्रयत्न) पुरुषार्थ, सुख, दुःख, (ज्ञान) जानना, गुण हों वह जीवात्मा [कहाता है]।

—जिससे एक काल में दो पदार्थों का ग्रहण ज्ञान नहीं होता उसको मन कहते हैं।

—गुण उसको कहते हैं कि जो द्रव्य के आश्रय रहे।

कारण के होने ही से कार्य्य होता है।

कार्य के अभाव से कारण का अभाव नहीं होता।

कारण के न होने से कार्य कभी नहीं होता।

जैसे कारण में गुण होते हैं वैसे ही कार्य्य में होते हैं।

—इन्द्रियों और संस्कार के दोष से अविद्या उत्पन्न होती है।

—जो दुष्ट अर्थात् विपरीत ज्ञान है उसको अविद्या कहते हैं।

—जो अदुष्ट अर्थात् यथार्थ ज्ञान है उसको विद्या कहते हैं।

—जो विद्यमान हो और जिसका कारण कोई भी न हो वह नित्य है, जो कारण वाले कार्यरूप द्रव्य गुण हैं वे अनित्य कहाते हैं।

—जो वेद को स्वर और पाठमात्र पढ़ के अर्थ नहीं जानता वह जैसा वृक्ष, डाली, पत्ते, फल, फूल और अन्य पशु धान्य आदि का भार उठाता है वैसे भारवाह अर्थात् भार उठाने वाला है और जो वेद को पढ़ता और उनका यथावत् अर्थ जानता है वही सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त हो के देहान्त के पश्चात् ज्ञान से पापों को छोड़ पवित्र धर्माचरण के प्रताप से सर्वानन्द को प्राप्त होता है।

—जो अविद्वान् हैं वे सुनते हुए नहीं सुनते, देखते हुए नहीं देखते, बोलते हुए नहीं बोलते अर्थात् अविद्वान् लोग इस विद्या वाणी के रहस्य को नहीं जान सकते।

—जो कुछ पढ़ना वा पढ़ाना हो वह अर्थज्ञान सहित चाहिये।

—ऋषिप्रणीत ग्रन्थों को इसलिये पढ़ना चाहिये कि वे बड़े विद्वान् सर्वशास्त्रवित् और धर्मात्मा थे।

—वेद ईश्वरकृत होने से निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण वेद ही से होता। ब्राह्मणादि सब ग्रन्थ परतःप्रमाण अर्थात् इनका प्रमाण वेदाधीन है।

—वेदादि सत्य शास्त्रों के स्वीकार में सब सत्य का ग्रहण हो जाता है। जो कोई इन मिथ्या ग्रन्थों से सत्य का ग्रहण करना चाहे तो मिथ्या भी उसके गले लिपट जावे। इसलिये 'असत्यमिश्रं सत्यं दूरतस्त्याज्यमिति' असत्य से युक्त ग्रन्थस्थ सत्य को भी वैसे छोड़ देना चाहिये जैसे विषयुक्त अन्न को।

—जैसा एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है वैसे ही सृष्टिविद्या के भिन्न-भिन्न छः अवयवों का छः शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं। सृष्टि के छः कारण हैं, इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक-एक शास्त्रकार ने की है इसलिये इनमें कुछ भी विरोध नहीं।

—सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है।

—क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने सुनने का शूद्रों के लिये निषेध और द्विजों के लिये विधि करे? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिये बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं। जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थ और निर्बुद्धिता का प्रभाव है।

भला जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् हो तो नित्यप्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहे: फिर सुख कहां?

संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृतादि इन सब दानों से वेदविद्या का दान अतिश्रेष्ठ है। इसलिये जितना बन सके उतना प्रयत्न तन, मन, धन से विद्या की वृद्धि में किया करें। जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान् होता है। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमान गोहत्या न करें

गोरक्षा सम्मेलन में चौ० तय्यब हुसैन खां की अपील

फीरोजपुर झिरका (गुड़गांव)। आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात का छठा महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें राष्ट भाषा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, वैदिक परिवार सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन जैसे उपयोगी सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इनमें आर्य जगत् के मनीषी विद्वानों, संन्यासियों और आर्य नेताओं ने अपने विचारों से धर्म प्रेमी जनता को प्रभावित किया। गोरक्षा सम्मेलन में चौ० तय्यब हुसैन खाँ सदस्य लोक सभा ने मेव मुसलमान भाइयों को जो भारी संख्या में उपस्थित थे सम्बोधित करते हुए कहा कि गौ जैसे उपयोगी पशु को कतल नहीं करना चाहिए। हरयाणा में गौ कतल करने के विरुद्ध कानून बना हुआ है। हमारे कुरान में लिखा है कि पड़ोसी की भावनाओं का आदर करो। सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति श्री तय्यब हुसैन खां को भेंट की गई। नशाबन्दी सम्मेलन में चौ० अब्दुल रजा खां एम०एल०ए० ने लोगों को शराब न पीने को कहा। उन्हें भी सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेंट की गई। शोभा यात्रा में चार जिलों गुड़गांव, अलवर भरतपुर और मथुरा की सैकड़ों आर्य समाजों तथा आर्य भाइयों ने भाग लिया। महा सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द सरस्वती थे। समारम्भ स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने किया। ध्वजारोहण कार्यक्रम प्रो० राम सिंह जी (प्रधान अखिल भारतीय हिन्दू महासभा) के कर कमलों द्वारा हुआ। इसके अतिरिक्त मुख्य विद्वान् स्वामी धर्मानन्द सरस्वती विद्यामार्तण्ड, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य विष्णु मित्र (उपकुलपति हरयाणा गुरुकुल विद्या पीठ), प्रो० शेर सिंह सदस्य लोक सभा श्रीमती ईश्वरी देवी, बाबू राम मेहर एडवोकेट रोहतक, श्री सुखदेव शास्त्री, महाशय भरतसिंह (सभा मन्त्री हरयाणा) और वीरेन्द्र सिंह वीर ने अपने विचारों से जनता को लाभान्वित किया। सम्मेलन की सफलता के लिए राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद, उपराष्ट्रपति श्री बी. डी. जत्ती मुख्य मन्त्री श्री बनासीदास गुप्त तथा केन्द्रीय मन्त्री श्री राजबहादुर इत्यादि की ओर से शुभ कामनाएँ प्राप्त हुई।

सत्यार्थ—प्रकाश शताब्दी मनाएँ

जाग सके तो जाग !

—श्रीहरि प्रसाद शुक्ल 'श्रीहरि'

जाने तू कब से है सोया
सोने में ही सब कुछ खोया,
इस खोने वाले सोने से
मत कर अब अनुराग
जाग सके तो जाग !

सदा पूर्ण है तू अपने मन में
फिर क्यों भटक रहा सपने में।
इस सपने की झूठी माया
से अब ले वैराग
जाग सके तो जाग।

एक बार निर्भीक पने से,
अरे ! दूर कर दे अपने से,
मिथ्या माया - लोभ मोह
मद अहंकार की आग
जाग सके तो जाग !

देख कभी तू ही नाहर था
जग तेरे आगे कायर था।
तेरे पद विक्षेप मात्र से
कंपता था भू - भाग
जाग सके तो जाग !

कैसे आकुल विकल क्षीण है
सब कुछ खोकर बना दीन है
अरे मिटा दे अब तो अपना
यह कलंक का दाग
जाग सके तो जाग !

यह प्रेरक मरू-धरा

है कौन इसे कहता उजाड़,
मरु धरा रही उर्वरा धरा।
इसने उपजाया है प्रताप,
'गोरा' 'बादल' चूड़ा हमीर।
इस ही मिट्टी में उपजे हैं,
जयमल फत्ता से अमर वीर।
पद्मिनी प्रलेय बन पलभर में,
हो गई भस्म का ढेर यहाँ।
कह रहा खड़ा चित्तौड़ स्तम्भ,
कुम्भा से जन्मे शेर यहाँ।
क्या क्या इसने नर रत्न दिए,
विद्युत्-मणि से आंगन निखरा।
है कौन इसे कहता उजाड़,
मरु-धरा रही उवरा धरा।

—भरत व्यास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...किन्तु रहस्य न दिया

युद्धचक्र दो दिन से गतिहीन था। अबीसीनियाई सैनिक अपने-अपने शिविरों में लेटे मीठी नींद में निमग्न थे। सहसा ही उन्हें एक समाचार प्राप्त हुआ कि इटली की सेनाएँ द्रुतगति से बढ़ती आ रही हैं। आगे बढ़कर सामना करने का अवसर भी न रह गया था। नगर में मोर्चा लगाकर संघर्ष करने का तात्पर्य था अपने ही देश का विनाश। देखते ही देखते समग्र नगर किसी विधवा की मांग के तुल्य सूना और वीरान हो गया।

१५ वर्षीया किशोरी 'लायना' ने अपने नाम के सही अर्थ को समझते हुए पलायन करना कायरता समझा।

उसने स्वदेश की पताका अपने मकान पर फहरा दी और उसके स्तम्भ के सहारे टिककर वह खड़ी हो गई। कुछ ही देर बाद इटली की सेनाएं नगर में प्रविष्ट हो गई। सैनिकों की रण हुंकार से सम्पूर्ण नगर सिहर उठा। अबीसीनिया का ध्वज वायु में फर-फर फहरा रहा था। इटली के सैनिकों का ध्यान उस मकान की ओर आकृष्ट हुआ। वे उसी ओर बढ़ते चले गए। जहाँ लायना अपने विचारों में खोई मौन खड़ी थी।

"तुम कौन हो?" कप्तान का कठोर स्वर सहसा ही गूंज उठा।

"एक अबीसीनियाई बाला।"

"नगर के सारे लोग कहाँ जा छिपे हैं, बिटिया।" कप्तान ने वाणी में नम्रता लाते हुए पुनः प्रश्न किया।

"यह मैं नहीं बता सकती कप्तान साहब।"

अब नम्रता और मानवीयता की भूमिका समाप्त हो गई और वह पुनः कठोरता सहित बोला "शैतान किशोरी, तुझे मेरे प्रश्न का उत्तर तो देना ही होगा।"

कप्तान के चेहरे पर कठोरता के भाव पूर्ण तीव्रता सहित उभर रहे थे किन्तु लायना के मुखमंडल पर एक अबोध सी मुस्कान फैल गई मानो वह कप्तान के दर्प को चुनौती दे रही हो।

क्रोधाग्नि से दग्ध कप्तान कांप रहा था। उसके नेत्रों से अंगार बरस रहे थे। ओठ फड़क उठे थे और उसकी मुट्ठियाँ बंध गईं। उसका भारी भरकम बूट लायना के घुटनों पर जा पड़ा और वह हलकी आवाज निकाल कर मौन हो गई। कप्तान ने अपने दोनों बूटों के प्रहार से लायना के पैरों को लहू-लुहान कर दिया। परन्तु वह अपने स्थान पर पाषाण प्रतिमा तुल्य अडिग खड़ी रही। और फिर नितांत विश्वासपूर्ण मुद्रा में लायना ने कहा "मेरे दिल में जो रहस्य छिपा है उसे तुम मेरे सारे शरीर को कुचल कर भी न पा सकोगे।"

कप्तान अपनी पराजय पर खीझा उठा। उसने लायना का सिर अपनी पूर्ण शक्ति लगाकर ध्वज स्तम्भ से टकरा दिया। रक्त की अविराम धारा प्रवाहित हो उठी उसके पैर तो पहले ही घायल होकर रक्त से लथपथ हो चुके थे। लायना के जख्मों से बहते रुधिर की धारा से कप्तान के काले बूट भी लाल हुए जा रहे थे।

लायना शत्रुता के घेरे में खड़ी थी। चारों ओर से नरपशु उस किशोरी पर कोड़ों के कठोर प्रहार कर रहे थे। उसे भाँति भाँति की शारीरिक वेदनाएं दी जा रही थीं और क्रूर सैनिक उसकी इस विवशता पर कहकहे लगा रहे थे। इस वीरबाला को नग्न कर घन्टों तक भूमि में आधा गाड़े रखा गया। फिर उसके स्तन काट दिए गए। मानवता लरज उठी थी। धरती पर लायना के लाल रक्त की लालिमा फैल गई थी। किन्तु वह जोश से परिपूरित वाणी से कह रही थी "तुम सरीखे नराधमों की वासना का शिकार बनने के बदले में स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए अपने शरीर को समर्पित करने में तुमने मेरा हाथ बटाया है कप्तान जिसके लिए मैं तुम्हारा आभार मानती हूं।"

अर्धमृत सी लायना पर धीरे-धीरे अचेतना छाने लगी थी। शारीरिक सख्तियां झेलते झेलते उसका हृदय व मष्तिस्क भी निष्प्रभ होने लगा था। कप्तान के अनुभवी नेत्रों ने उसकी यह कमजोरी भांप ली। उसने समझाते हुए नम्रतापूर्वक उस बालिका से कहा "तुम दूसरों के लिए आपदा क्यों झेल रही हो! बता दो न कि अन्य लोग कहाँ छिपे हुए हैं?"

निर्मम अत्याचारी से कम्पित होकर जबान एक बार रहस्य बताने को उठी। लायना को अचानक ही ध्यान आया "यह कम्बख्त वाणी घर का दीपक होकर अपना ही घर जला रही है।"

अंतिम समय पर अपने पिता के सभी कथन उसे स्मरण हो आए "देश का सम्मान तुम्हारे हाथ में है लायना!" शत्रु को यदि हमारा खून मिल गया तो देश सदा के लिए दासता की बेड़ियों में जकड़ा जाएगा।"

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—भगवान् लाल पुरोहित

विकास के लिए मानसिक ऊर्जा आवश्यक

यह तो मान्य तथ्य है कि जीवन में पवित्र ऊर्जा मनुष्य के अभ्युत्थान में एक महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक स्थान रखती है। पवित्र मानसिक स्थिति ही समाज में भ्रष्टाचार एवं नैतिक पतन के प्रतिकूल शक्ति बनकर उच्च मर्यादा, शील, सदाचार, एकता, संगठन एवं विकास की आधारशिला रखती है। इसी आधार पर अधिकाधिक न्याय असत्य, अनुशासन एवं स्वच्छ प्रशासन भी संभव है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास के साथ उत्पन्न जीवन की स्फूर्ति एवं गतिशीलता के मध्य उच्च मानवीय मूल्यों की रक्षार्थ माँग-लिप्सा पर नियंत्रण रखना समाज के लिए आवश्यक होगा, अन्यथा शान्ति एवं व्यवस्था की स्थापना असंभव है। भौतिक लिप्साओं की वृद्धि पर नियंत्रण नहीं रखा गया तो मानव मस्तिष्क की ऊर्जा के स्रोत मिट जायेंगे। ऐश्वर्य एवं समुचित भौतिक सुख साधनों की उपलब्धि का आधार संयम एवं अनुशासन जनित उच्चतर चेतना ही है।

यह एक सैद्धान्तिक बात हुई, किन्तु संयमजनित इस उच्चतर चेतना की प्राप्ति का मार्ग क्या है? अध्यात्म हमें चित्त की चंचलताओं पर नियंत्रण स्थापित करते हुए उसकी निर्विकार एवं शुद्ध स्थिति को प्राप्त करने के लिए उन मार्गों पर दृष्टिपात करना होगा, जिनका दृढ़तापूर्वक अवलंबन करते हुए प्राचीनकाल से आज तक के महान् पुरुषों ने जीवन में शांति, क्रांति, तेजस्विता, कर्मशक्ति एवं दिशाबोध ग्रहण किया।

कृषकों और पिछड़ी जातियों के विकास के लिए अनेक प्रकार की सहायता उपलब्ध किए जाने के कार्यक्रम बने हैं। उनके क्रियान्वयन के लिए प्रयत्न भी जारी हैं, परन्तु सफलता के लिए समग्र समाज का सहयोग प्राप्त होना आवश्यक है, किसानों में साक्षरता लाने के लिए भी आवाज उठाई गई है, स्वतन्त्रता के बाद से ही कई अर्ध सरकारी संस्थाओं ने इस कार्यक्रम को हाथ में लिया है, परन्तु इसमें सफलता प्राप्ति के लिए हमें अपनी दृष्टि का विस्तार करना होगा। ग्रामों में साक्षरता के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के नियमों की अवहेलना जो अब तक होती रही है, वह भविष्य में न हो, विद्यालयों के निरीक्षक एवं शिक्षा विभाग इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपने अधिकारों का विधिवत् प्रयोग करें। राज्य सरकार को भी चाहिए कि वह शिक्षा विभाग को इस विषय में अपनी ढीली नीति त्याग देने के लिए अनुप्रेरित करें एवं स्पष्ट निर्देश दें कि ग्राम्य अशिक्षा महामारी है, जैसी चेचक या मलेरिया; एवं इसके समूल नाश करने के लिए अपने समस्त वैध हथियारों का उपयोग करें। बिना शिक्षित किसान के भारत का भविष्य ही क्या है?

हम जो भी कार्यक्रम हाथ में लें चाहे भूमि के संबंध में हों, ग्रामोत्थान के संबंध में हों, रोजगार वृद्धि के संबंध में हों, भ्रष्टाचार उन्मूलन के सम्बन्ध में हों, ये सब या कोई भी कार्यक्रम तभी शक्ति के साथ लागू किए जा सकते हैं, जब हमारे अन्दर सच्ची लगन हो। एक प्रेरणा हो। इस बात का विश्वास हो कि समाज में इन कार्यक्रमों से प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक नागरिक को लाभ है और राष्ट्र को मजबूत बनाना है तो प्रत्येक का इन कार्यक्रमों में दिलचस्पी रखना नैतिक कर्तव्य है।

अपने अन्दर एक आग, एक जोश, कार्य करने और कार्यक्रमों को कामयाब बनाने की भावना पैदा करने के लिए हम अपने दिमाग को, अपने दिल को इस राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण बनाने के लिए आखिर किस पौष्टिक आहार का—किस दवा का सेवन करें? अवश्य ही वह दवा, वह पौष्टिक आहार है सदाचारपूर्ण जीवन। चाहे हम मूर्ख हों, चाहे हम उपेक्षित हों किन्तु हमें सदाचारी जीवन के माध्यम से ही भारत को ऊंचा उठाने की शक्ति अपने में लानी है। जब भी किसी देश में क्रान्ति आई, जब भी किसी देश ने करवट बदली, जब कोई जलजला आया, जब लोगों की आँखें खुलीं, जब लोगों की आँखों में खुशियाँ चमक उठीं, तो इससे पहले कुछ लोगों ने नैतिकता, संयम, त्याग और बलिदान का सहारा लिया और देश प्रेम—देश सेवा का यज्ञ उन्होंने किया। तब सारे मुल्क में, सारे समाज में एक हरकत पैदा हुई और लोग कदम से कदम मिलाकर चले। कुछ मंजिलें तय कीं। आज हमें फिर अपनी आजादी की लड़ाई के इतिहास को एक नजर से देखना है। फिर जोश, उत्साह और एकता का परिचय देना है।

हड़तालें, तोड़फोड़, जमाखोरी, चोरबाजारी, रिश्वत आदि का व्यापक प्रचलन किन कारणों से हुआ? हमारी अत्यधिक अंधी स्वार्थवृत्ति और अविवेक ही इसकी पृष्ठभूमि में है। मनुष्य की चेतना शक्ति का ह्रास भी इसे कहना अनुपयुक्त नहीं होगा। किन्तु यह चेतना शक्ति कहाँ से आती है? यद्यपि इसका उद्गम स्थल तो स्वयं मनुष्य की अन्तरात्मा ही है, किन्तु अन्तरात्मा पर पड़े मैल को कौन साफ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करे ? यदि मनुष्य में स्वयं ही इतना विवेक हो तब तो अन्तरात्मा को स्वच्छ शुद्ध रूप में पा लेने के लिए आवश्यक तत्परता वह प्रकट कर ही लेगा किन्तु समग्र समाज में नागरिक चेतना को उद्दीप्त करने हेतु ज्ञान के प्रसारक शिक्षकजन एवं जनहितैषी पत्र-पत्रिकाओं का सतर्क रहना भी आवश्यक है।

मनुष्य की चेतना वही जागृत कर सकता है जो निर्भय होकर सत्य बात कह सके। किन्तु सत्य बात कहने के लिए, जरूरत की बात कहने के लिए शिक्षक एवं पत्रकार अथवा किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन के प्रत्येक पल में सत्य के साथ प्रीति और असत्य के प्रति विरोध का परिचय देना होगा। इसी का नाम सत्य की खोज है। जो व्यक्ति जीवन के हर क्षण में सत्य की खोज नहीं करता और असत्य के साथ सहयोग कर सकता है, उसकी वाणी में सुधार लाने की शक्ति नहीं हो सकती। जो सत्य का साधक नहीं, उसे सुधार करने के लिए पहले क्षमता प्राप्त करने हेतु साधना मुक्त कार्यकर्ताओं को, अधिकारियों को अपने अन्दर सत्यव्रत पर दृढ़ रहने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। इसी में उनके चरित्र का तेज प्रकट होगा बिना सत्यव्रत के कार्य कर्ता 'कार्यकर्ता' शब्द को कलंकित करेगा। अधिकारी 'अधिकारी' शब्द को कलंकित करेगा। विद्वान् 'विद्वत्ता' शब्द का महत्त्व गिरा देगा। सच करनी होगी। झूठ का तिरस्कार करना होगा। यदि झूठ सत्य के अन्वेषी पर हावी होने का प्रयत्न करे तो सत्य के अन्वेषी को अपनी पूरीशक्ति से अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। सत्यव्रत पर न रहने वाला विद्वान् तो वाक् पटु है—विद्वान् नहीं। विद्वान् तो वही हो सकता है जिसके हृदय में ज्ञान के साथसत्य की किरण हो। कार्यकर्ता और अधिकारी सत्य की लौ के बिना अपने नाम को सार्थक नहीं करता। समय आ गया है कि हम सत्य को ढूंढ़ निकालें। उसको खोजें। उसकी उषाता से स्पन्दित हों। ऊर्जा से परिपूर्ण हों।

सवाल उठता है चित्त में दोष वृत्ति की उत्पत्ति क्यों होती है ? इससे सुरक्षित रहने का उपाय क्या है ? और क्या है दोष वृत्ति ? क्या नुकसान हुए हैं दोष वृत्ति से ? पतन का कारण दोषवृत्ति ही है। इतिहास में जब कभी किसी समाज के लोग किसी देश या जाति के लोग अपने अन्दर कुत्सित वृत्तियों के पोषण में अपनी ज्ञान हीनता के कारण संलग्न हो गए और अपरिचित रहे कि स्वयं ही इसके कृतिकार हैं, तब अनजाने में उन्होंने अपनी तृष्णाओं और वासनाओं की तृप्ति में अपने कदम शोषण (दूसरों का और निज का) करने में बढ़ाये। इससे समाज में चेतना अदृश्य हुई और अहंकार की वृद्धि हुई। वासनाओं और शोषण का धूमिल वातावरण बना। लेकिन गहन अन्धकार के बाद कोई नक्षत्र प्रकट होता है। अन्धकार दूर होने लगता है। मानव समुदाय इस परिवर्तन, इस जागरण, इस उषाकाल, इस ब्राह्म मुहूर्त, इस सूर्योदय के लिए सदैव साधना रत रहा है।

सुव्यवस्था, साधना और न्याय के व्यापक प्रतिष्ठापन में बाधक कौन है ? असंयम। असंयम ही शोषण शोषण का कारण है। अन्याय और परिग्रह, परिग्रह के लिए और अधिक अन्याय, क्षुद्र स्वार्थ के लिए दमन, क्या यह तमाम अव्यवस्था के कारण नहीं है? अगर अभाव को, उत्पादित उपभोग्य पदार्थों के अभाव को असंयम व भ्रष्टाचार का कारण माना जाता है तो यह क्यों नहीं प्रतीत होता कि बिना आत्म नियंत्रण के कोई भी कर्तव्य सम्पन्न नहीं हो सकता। अधिकार। केवल अधिकार। कहीं तृष्णा बारूद तो नहीं ? कर्तव्य के शील बिना अधिकार। नहीं। यह कैसा अधिकार। इस अधिकार का कोई अस्तित्व नहीं। सत्य, न्याय और कर्तव्य के प्रति समर्पित अधिकार ही मानवता का पोषक प्राण है और अभाव को मिटाने के लिए, उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए जिस जीवन्त शक्ति की आवश्यक है, जिस उदारशीलता और संगठन की आवश्यकता है, उनका सहयोगी तत्त्व है विश्वास।

चेतना शून्य श्रम अपने अस्तित्व के लिए निराश्रित होकर प्रतिक्षण आत्मघात करने के लिए क्यों बाध्य है ? हमारे हाथ काम के लिए उठ रहे हैं। लेकिन वे अपने को अवसर रहित ही नहीं, सही और समय पर मार्ग दर्शन के अभाव में रुका हुआ अनुभवकरते हैं। लोकतंत्र में जनप्रतिनिधियों, प्रशासकीय संगठनों व विश्वविद्यालयों को इस मानसिक अवरोध को दूर करने के लिए प्रयास करना होगा।

(पृष्ठ ३२ का शेष)

एक नवीन शक्ति का उस किशोरी में संचार हुआ और वह मन ही मन कहने लगी "नहीं-नहीं। यह कभी नहीं हो सकता। मैं अपने प्राण बचाने के लिए हजारों नर-नारियों का सुहाग नहीं उजड़ने दूंगी। मेरे प्राणों से अधिक उन देश भक्तों के प्राण प्रिय हैं, जो स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हैं।"

बड़ी फुर्ती से उसने समीप खड़े एक सैनिक से तलवार छीनी और जब तक वह इस रहस्य को समझता लायना ने अपनी पूरी जीभ काट कर कप्तान के समक्ष फेंक दी। उसके मुख से रक्त की धारा प्रवाहित हो रही किन्तु वह अभी भी हंसने का प्रयास कर रही थी। उसकी हंसी में अब खिलखिलाहट का माधुर्य न था अपितु ओ-ओ-की लरजाने वाली आवाज थी।

पाषाणहृदय सैनिक भी एक बार काँप उठे थे। अड्डे से निकालकर लायना मरने के लिए सैनिकों के के बूटों तले फेंक दी गई जहाँ-तहां उसका पूरा शरीर कुचल दिया गया।

आज लायना नहीं है परन्तु अबीसीनिया के चौराहे पर खड़ी हुई उसकी प्रतिमा उसकी वीरता और राष्ट्रभक्ति का स्मरण दिला रही है तथा आने के लिए प्राणदान की प्रेरणा प्रदान कर रही है।

लायना मरकर भी अमर है। स्वतंत्रता के लिए उसका बलिदान इतिहास का जाज्वल्यमान पृष्ठ है। उसके कुचले हुए पैर, उससे बहता हुआ रक्त, जीभ के बिना मूक मुख और उसके विकृत शरीर के समक्ष विश्व का समग्र सौन्दर्य हेय है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi